RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2019-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 30-31 एक प्रति 10 : रुपये
रविवार 27 अक्तूबर एवं 3 नवम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण एवं दीपावली विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर के अधीन चल रही शिक्षण संस्था आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के पहुंचने पर उनका स्वागत करते हुये श्री सरदारी लाल जी आर्य वरिष्ठ उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा एवं श्री विनोद भारद्वाज जी मंत्री नवांशहर एवं श्री विपिन शर्मा जी मंत्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य,रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा एवं अन्य के आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां पहुंचने पर स्कूल प्रिंसीपल श्रीमती सारिका एवं स्कूल स्टाफ उनका स्वागत करते हुए।

समारोह में पहुंचने पर संयुक्त चित्र खिंचवाते हुये श्री अरुण कुमार जी जालन्धर, सभा मंत्री श्री विनोद भारद्वाज नवांशहर, सभा मंत्री श्री विपिन शर्मा जालन्धर, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा उप प्रधान सभा, श्री सरदारी लाल जी आर्य वरिष्ठ उप प्रधान सभा, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार, श्री सुधीर शर्मा सभा कोषाध्यक्ष, श्री सुदेश कुमार सभा मंत्री, श्री राहुल शर्मा जी, श्री ज्योति जी एवं अन्य।

महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस

ले०—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण 30 अक्तूबर सन् 1883 को दीपावली के दिन हुआ था। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अजमेर में अपने प्राणों का त्याग किया था। स्वामी जी को जोधपुर में विष दिया गया था। स्वामी जी शाहपुर से चलकर जोधपुर पहुंचे थे। जब शाहपुर से जाने वाले थे तो स्वयं शाहपुराधीश नरेश श्रीचरणों में उपस्थित हुए और अभिवादन करके इस बात का संकेत किया था कि आप जोधपुर तो पधारते हैं परन्तु वहां वेश्या आदि का खण्ड़न न करना। इस कथन की पृष्ठभूमि यह है कि जोधपुर के महाराजा एक वेश्या के जाल में फंसे हुए थे और यह स्पष्ट ही था कि महर्षि दयानन्द उनके दुराचार के विरूद्ध खुले शब्दों में उपदेश दिए बिना नहीं रहेंगे। इसीलिए महर्षि दयानन्द के शुभचिंतक अनिष्ट की शंका करते थे। इसीलिए कुछ भक्तों ने भी भावी विपत्ति के भय से महाराज से हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि वहां न जाए। स्वामी जी महाराज ने शाहपुर नरेश को उत्तर दिया था कि राजन्! मैं बड़े वृक्ष को नुहरने से नहीं काटता, उसके लिए तो बड़े शस्त्र की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार महर्षि ने अपने भक्तों के उत्तर में कहा था, यदि लोग हमारी अंगुलियों को बत्ती बनाकर जला दें तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहां जाकर सत्योपदेश अवश्य करूंगा।

ऊपर की घटनाएं एक प्रकार से भविष्य की ओर स्पष्ट रूप में ही संकेत थी। स्वामी जी ने अपने भाषणों में राजाओं के आचरण की शुद्धता पर काफी जोर दिया था। परिणामस्वरूप महाराजा की नन्हीं जान वेश्या जो स्वामी जी की शत्रु बन गई थी। जोधपुर नरेश का एक दरबारी फैजुल्ला खाँ स्वामी जी का शत्रु बन गया था। इसका कारण था कि स्वामी जी द्वारा इस्लाम की समीक्षा। इन सभी ने स्वामी जी के विरोध में षड्यन्त्र बनाया। स्वामी जी के रसोईए से मिलकर उन्हें घातक विष दिया गया। उसी के परिणामस्वरूप दीपावली के दिन अजमेर नगरी में स्वामी जी महाराज का शरीरान्त हुआ। सन् 1824 ई. में स्वामी जी का जन्म हुआ था, किन्तु 1838 ई. में टंकारा ग्राम के एक शिवालय में शिवरात्रि को जो ज्योति प्रज्वलित हुई थी, वह चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैलाकर अन्ततः सन् 1883 की दीवाली को अन्य दीपों को प्रज्वलित कर स्वयं लुप्त हो गई।

सन् 1863 में जब महर्षि दयानन्द ने अपनी शिक्षा पूर्ण करके गुरू से विदा मांगी तो स्वामी विरजानन्द जी ने कहा कि देश का उपकार करो, सत्यशास्त्रों का उद्धार करो, मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटा दो और वैदिक धर्म का प्रचार करो। गुरू ने शिष्य के कन्धों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी रख दी थी। गुरू को पूर्ण विश्वास था कि इस जिम्मेदारी को उठाने की उनके शिष्य दयानन्द में क्षमता और सामर्थ्य है। शिष्य ने नतमस्तक होकर गुरू की आज्ञा को स्वीकार किया और संसार रूपी अथाह समुद्र में अपनी जीवन रूपी नौका को डाल दिया। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्रों में अनेक महत्वपूर्ण सुधार आंदोलनों का सूत्रपात किया। मूर्तिपूजा के स्थान पर निराकार सर्वशक्तिमान ईश्वर का ध्यान, भक्ति और उपासना की पद्धति प्रचलित की। विभिन्न अवतारों के और देवी देवताओं के स्थान पर ऐकेश्वरवाद को प्रस्थापित किया। नाना प्रकार के धर्म ग्रन्थों के स्थान पर वेद और वेद सम्मत ऋषियों-मुनियों के ग्रन्थों की महत्ता और वेद प्रतिपादित वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया। महर्षि दयानन्द एक आदर्श समाज सुधारक थे। उनकी दृष्टि में सबसे आवश्यक लक्ष्य व्यक्ति का निर्माण था। उन्होंने १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की थी और उसके छठे नियम में संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य निर्धारित किया है। आर्य समाज के दस नियमों को दृष्टि में रखकर यह विदित होता है कि महर्षि का उद्देश्य यह था कि ईश्वर का स्वरूप सबकी समझ में आए। उन्होंने ईश्वर को पहले नियम में सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल बताया है, वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म बताया है। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में व्यक्तियों की उन्नति के लिए सबसे आवश्यक तत्त्व स्वाधीनता और स्वतन्त्रता है। वे यह जानते थे कि पराधीनता में न सुख है और न शान्ति है। स्वतन्त्रता के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति हर प्रकार की पराधीनता और दासता से मुक्त रहे। जब महर्षि ने कार्य आरम्भ किया था तब सारा भारत राजनीतिक दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। महर्षि को यह देखकर बड़ी वेदना होती थी और उन्होंने राजनीतिक दासता के निराकरण और स्वाधीनता प्राप्ति के लिए प्रबल रूप से प्रचार किया। महर्षि ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग सबसे पहले सत्यार्थ प्रकाश में किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि स्वराज्य प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

गुजरात की धरती पर टंकारा नामक ग्राम में उन्नीसवीं सदी में जिस दीपक का प्रादुर्भाव हुआ था उस दीपक ने अपने प्रकाश से संसार के गहनतम अन्धकार को दूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस महर्षि दयानन्द रूपी दीपक से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। टंकारा के एक शिवालय में शिवरात्रि को प्रज्जवलित वह दीपक स्वयं जला, अनेक बुझे हुए दीपकों को प्रज्जवलित किया और उसी सदीं के नवें चरण में पहुंचते-पहुंचते उस दीपक ने दीवाली के दिन ही अजमेर नगरी में शत-शत दीपकों को अपना आलोक दान कर, अपनी प्रभा से प्रभावित कर, अपने तेजपुंज से तेजस्विता प्रसारित कर, अपने अनुपम प्रकाश से प्रकाशित कर महाभियान का मार्ग अपनाया। महाप्रयाण का प्रवास प्रारम्भ किया।

महर्षि दयानन्द ने वेद का सन्देश देने के लिए अपने जीवन को अर्पित कर दिया। संसार के उपकार के लिए जिए और संसार के उपकार के लिए ही वह मर कर अमर हो गए तथा मरती हुई मानवता को अमरत्व का संदेश दे गए। वह क्रान्ति के पुञ्ज थे। साम्प्रदायिकता के दुर्भेद्य किलों को वैचारिक क्रान्ति से उन्होंने ध्वस्त किया। अज्ञानता एवं रूढ़िवाद के भंवर से मानव जाति का उन्होंने उद्धार किया। आँखे होते हुए भी ज्ञान दृष्टि के अभाव में मानव जाति भटक रही थी, महर्षि ने उसे ज्ञान दृष्टि रूपी दिव्य चक्षु प्रदान किए।

दीपावली का पर्व प्रत्येक वर्ष हमें ऋषि निर्वाण की याद दिलाता है। ऋषि दयानन्द का इस संसार से जाना भी हमें एक संदेश दे गया। नास्तिक गुरूदत्त के हृदय में आस्तिकता की ज्योति प्रज्जवलित कर गया। ऐसी पवित्र, पुण्य आत्मा को नमन करते हुए, उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए हम भी उस महान् आत्मा के पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लें, उनके जनहित के कार्यों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं।

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ले०—श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण प्रकाश के पर्व दीपावली की सायंकालीन बेला में हुआ था जिस समय लोग दीपक जलाकर अन्धकार को दूर करने का प्रयास करते हैं और अपने चारों ओर प्रकाश फैलाते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में जिस प्रकाश को प्रसारित किया वह कोई साधारण या भौतिक प्रकाश नहीं था अपितु उस वेद विद्या का प्रकाश था जिसके अभाव में हमारा देश पथभ्रष्ट हो गया था, तमाम कुरीतियों और बुराईयों से जकड़ चुका था, अज्ञान के अन्धकार से चारों ओर अविद्या का बोलबाला था। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महर्षि वेद रूपी दीपक का प्रकाश लेकर आए और सारे संसार को प्रकाशित करने का कार्य किया। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है, इसे आर्य समाज का तीसरा नियम बनाकर आर्य समाज को वेद विद्या का प्रचार करने का संदेश देकर इस संसार से विदा हो गए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज जीवन भर वेदरूपी सूर्य से प्रकाश प्राप्त करते रहे और उसी पावन प्रकाश से मानव मात्र को मार्ग दिखाते रहे। महर्षि दयानन्द के जीवन से अनगिनत मानवों ने वेद प्रकाश प्राप्त कर अपने जीवन के अज्ञान जनित कालिमा को दूर किया और अपने जीवन की सफल बनाया। इसीलिए महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस के अवसर पर हम भी तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का संकल्प लेकर महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाएं।

वेद अर्थ प्रायः ज्ञान के अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाता है, परन्तु महर्षि पाणिनी जी महाराज इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार से भी करते हैं- विद् ज्ञाने, विद् विचारणे, विद् लाभे, विद् सत्तायाम् जब तक मनुष्य ज्ञान-निर्भ्रान्त ज्ञान को प्राप्त नहीं करता और उसी के अनुसार विचार सवागर में डुबकी नहीं लगाता तब तक न तो उसे वास्तविक लाभ अर्थात् आत्मानन्द की प्राप्ति हो सकती है और न ही उसकी सत्ता ही टिकाऊ रूप धारण कर सकती है। सत्ता सत्य के आधार पर ही बनती-ठहरती है और सत्य जब तक ज्ञान का साथी न हो व्यवहारिक जगत में सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता। संसार में उसी की सत्ता अक्षुण्ण बनी हुई है जिन्होंने सत्य और ज्ञान को जीवन में समन्वयात्मक रूप से घटा कर अपने आप को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया था। अन्य प्राणी तो कीड़े-मकौड़ों की तरह संसार में जन्म लेते और मर जाते हैं। उनका नाम उनके परिवार वाले ही भूल जाया करते हैं।

महर्षि दयानन्द जी के जीवन में भी सत्य और ज्ञान यही दो आधार थे। इन दोनों की प्राप्ति वेद के आधार पर ही होती है। परन्तु आज हम वेद की ओर ध्यान देना, उसका विचार करना उचित नहीं समझ रहे हैं। वेद को छोड़ कर किया गया श्रम विफल ही होता है। सूर्य के उदय होते ही जैसे अन्धकार भाग जाता है, प्रकाश फैल जाता है उसी प्रकार जनमानस का अन्धकार वेद रूपी सूर्य के जीवन में उदय हुए बिना नहीं दूर नही हो सकेगा। महर्षि दयानन्द ने इसी तथ्य को आर्य समाज के तीसरे नियम में सामने रखा है। हमारा कर्त्तव्य बनता था कि हम महर्षि के आदेश को शिरोधार्य करके वेद से अपना और सारे संसार का कल्याण करते परन्तु हम अपने इस मार्ग से भटक गए। परिणास्वरूप आज हम स्वयं मार्ग की खोज करने में लगे हुए हैं और हमें मार्ग मिलने में नहीं आ रहा है। प्रकाश के होते हुए जो नेत्र मूंद लेते है उन्हें अन्धकार में ठोकरें खानी पड़ती हैं। आज मानव भटक रहा है। मानवता कराह रही है। दानवता का बोलबाला हो रहा है परन्तु हम चुपचाप बैठे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें जो मार्ग दिखाया था, जिस मार्ग पर चलकर हम अपनी और संसार की चतुर्दिक उन्नति कर सकते थे। उस कल्याणकारी मार्ग को भूल कर हम अपना रास्ता भटक गए हैं। जिसके परिणामस्वरूप आज समाज में फिर से अनेक कुरीतियां और बुराईयां फैल रही हैं। अगर हम संसार का कल्याण करना चाहते हैं तो हमें वेद रूपी ज्ञान की ज्योति से हर घर को प्रकाशित करना होगा। हर घर में वेद का प्रकाश होने से ही बुराईयों का नाश हो सकता है।

दीपावली के पावन पर्व पर हम प्रकाश करने के लिए दीपक जलाते हैं। दीपक की रोशनी से अपने-अपने घरों को जगमगाते हैं परन्तु यह बाहरी प्रकाश तो कुछ समय के लिए है। कुछ समय बाद वो दीपक बुझ जाते हैं और फिर अन्धकार आ जाता है। बाहर का प्रकाश क्षणिक प्रकाश है परन्तु आन्तरिक प्रकाश जीवन भर के लिए है। जिसके हृदय में एक बार ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित हो गई उसे कभी नहीं बुझाया जा सकता। उस ज्ञान के प्रकाश से सारे अन्धकार, मिट जाते हैं, सभी बुराईयों का अन्त हो जाता है, सभी कुरीतियां समाप्त हो जाती हैं। इसलिए हमें बाहरी प्रकाश से ज्यादा अपने अन्दर के प्रकाश को महत्व देना चाहिए। दीपावली का पर्व हर वर्ष प्रेरणा देता है कि हम अपने अन्दर ज्ञान का दीपक जलाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इसीलिए वेद का पढ़ना-पढ़ना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। इस परम धर्म का पालन करते हुए हम सभी महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर यह संकल्प लें कि हम स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा बताए मार्ग पर चलते हुए, अपने-अपने घरों में वेद की ज्योति को प्रकाशित करते हुए सम्पूर्ण संसार को वेद ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित करेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने का यही एकमात्र साधन है। महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस पर अगर हम उन्हें अपनी सच्ची श्रद्धाजंलि भेंट करना चाहते हैं तो हमें वेदों के प्रचार का संकल्प करना होगा। घर-घर में वेद का पवित्र प्रकाश फैलाने के लिए अपने-अपने जीवन का दीप जलाते हुए संसार पर छा जाएं।

सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि दीपावली के पर्व पर अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का संकल्प लेकर वेद के प्रकाश की ज्योति को घर-घर तक पहुँचाने का प्रयास करें। वर्तमान समय में आ रही समस्याओं के समाधान के लिए हम वेद की शरण लें। वेद के प्रचार-प्रसार को अपने जीवन का ध्येय बनाएं। वेद रूपी ज्ञान के प्रकाश से संसार में फैल रहे गुरूडमवाद, पाखण्ड, अन्धविश्वास को मिटाएं और लोगों को सन्मार्ग दिखाएं। यही संकल्प हम दीपावली और महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर लें।

समाज के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

ले०—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में लिखा है कि–संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इसी उद्देश्य के आधार पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक उत्थान के कार्यों में लगा दिया।

महाभारत काल के बाद भारत देश जहां कई मत–मतान्तरों में विभक्त हो गया, वहां अनेकों कुरीतियां भी देश के अन्दर फैल गई। बौद्ध और जैन मत का प्रचार हो गया। धार्मिक कुप्रथाओं में यज्ञों में पशुबलि और कभी–कभी नरबलि के प्रचार से भयानक अन्धविश्वास फैला हुआ था। सामाजिक क्षेत्र में एक ओर जहां जन्मगत वर्ण व्यवस्था से समाज के अन्दर अव्यवस्था फैली हुई थी वहीं दूसरी ओर अस्पृश्यता के रोग भयावह रूप से देश में फैल गए। इनके साथ–साथ नारी के प्रति हीन दृष्टि से निरादर की भावना ने समाज की व्यवस्थाओं को तहस–नहस कर दिया था। इन परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को सही मार्ग दिखाने का बीड़ा उठाया। शंकराचार्य और मध्य युग के नीतिकारों और इनके वचनों के एकदम विपरीत महर्षि दयानन्द नारी के विषय में सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं कि– सब स्त्री और पुरूष अर्थात् मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है और सब मनुष्यों के वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के 36 वें अध्याय के दूसरे मन्त्र का अर्थ लिखते हुए महर्षि लिखते हैं कि– परमेश्वर कहता है कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश करता हूं, वैसे तुम भी किया करो। इसी प्रकरण में महर्षि शूद्रों को वेदादि पढ़ने के अधिकार के सम्बन्ध में बड़े प्रबल शब्दों में कहते हैं कि– क्या परमेश्वर शूद्रों का भला नहीं करना चाहता, क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने सुनने का शूद्रों के लिए निषेध और द्विजों के लिए विधि करे। जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि को पढ़ाने और सुनाने का नहीं होता तो इनके शरीर में वाणी, कान और इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किए हैं।

स्त्री को वेद तथा अन्य विद्याएं पढ़ने के अधिकारों के प्रश्न के उत्तर में महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास में इमं मन्त्रं पत्नी पठेत् के प्रमाण से कहते हैं अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी हों तो वे यज्ञ में मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके। इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी जाति को उनके वंचित अधिकारों को प्राप्त कराया। शूद्रों की जो बुरी अवस्था थी उस अवस्था से मुक्ति दिलाई।

महर्षि ने समाज में जहां भी कोई कुरीति देखी उस कुरीति के खिलाफ ड़टकर आवाज उठाई। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक कुरीतियों और रूढ़ियों से छुटकारा पाने हेतु एक ईश्वर की पूजा के प्रसार और प्रचार के लिए वैदिक धर्म के पुनरूद्धार के लिए, विदेशी सत्ता की दासता रूपी जंजीरों से मुक्ति पाने के लिए, स्वराज्य प्राप्ति की भावना को जाग्रत करने के लिए और सभी प्रकार की सामाजिक कुरीतियों जात–पात के और ऊंचनीच के भेदभाव को तिलांजलि देने के लिए, स्त्री जाति, गौवंश और अनाथों की रक्षा के लिए, हिन्दु जाति की रक्षा के लिए तथा अनेक समाज उत्थान के कार्यों के लिए आर्य समाज की स्थापना की और महर्षि ने अपने अल्प जीवनकाल में उस संस्था के माध्यम से समाज सुधार के कार्यों में एक अद्‌भुत क्रान्ति पैदा करके राष्ट्र के जीवन में एक नई चेतना पैदा की। जिससे समाज, राष्ट्र, देश, प्रजा और अपने अतीत के गौरव को जानकर अपने प्राचीन मूल्यों में रूचि लेने लगा। परिणाम यह हुआ कि राजनीतिक क्षेत्र में हमने महर्षि से प्रेरणा पाकर मुक्ति पाई और स्वराज्य प्राप्त किया। सब प्रकार की कुरीतियों, पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों, बुराईयों के खिलाफ महर्षि दयानन्द ने आवाज उठाकर समाज में एक नई क्रान्ति को जन्म दिया। महर्षि के प्रयासों के परिणामस्वरूप समाज में सती प्रथा बन्द हुई, बाल विवाह के लिए कानून बना, नारी जाति को उसके अधिकार मिल गए। महर्षि दयानन्द ने लोगों के मन–मस्तिष्क को बदल दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस सन्देश देता है कि उठो आर्यों जागो समाज में आज फिर अनेक प्रकार की कुरीतियां फैल रही हैं। धर्म के नाम पर पाखण्ड़ और अन्धविश्वास फिर से पनप रहा है। ये सभी कार्य आर्य समाज को करने हैं। महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस पर हम सभी इन बुराईयों के खिलाफ लड़ने का संकल्प लें। दीपावली का पर्व हमें यही प्रेरणा देता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन रूपी दीपक से प्रकाश लेकर समाज के अन्दर वेदों का सन्देश फैलाएं। महर्षि दयानन्द का जीवन स्वयं एक दीपक के समान है जिसने अनेकों बुझे हुए दीपकों को प्रकाशित किया है। अगर हम महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि अर्पित करना चाहते हैं तो हमें भी महर्षि के जीवन से शिक्षा लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिए वेदों के प्रचार के लिए, समाज उत्थान के कार्यों को करना होगा। महर्षि दयानन्द के कार्यों को अपनाना और आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि है।

महर्षि दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि

ले०—श्री अशोक पुरुथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

आर्य जगत् दीपावली के पर्व को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस के रूप में मनाता है। महर्षि दयानन्द को इस संसार से विदा हुए १३६ वर्ष हो गए हैं परन्तु उनके द्वारा दी गई शिक्षाएं आज भी सार्थक हैं। महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर उनकी शिक्षाओं पर चलने का संकल्प लेकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें। ऋषि द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करना, उनकी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करना, वेद विद्या का प्रकाश करना ही ऋषि दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि है।

दीपावली की रात्रि में महर्षि दयानन्द का देहान्त हुआ था। उनका आगमन सूर्योदय की भांति था। उनका इस संसार से जाना सूर्यास्त के समान सिद्ध हुआ। महर्षि दयानन्द रूपी वेद का प्रकाश करने वाला सूर्य असमय ही अस्त हो गया। काश महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कुछ समय और जीवित रहते तो संसार का महान उपकार हो जाता। जब दीवाली की रात महर्षि दयानन्द ने निर्वाण प्राप्त किया था और वैदिक विचारधारा का सूर्यास्त हो गया था। उसके पश्चात भी उसकी लालिमा का प्रकाश दूर-दूर तक फैलता रहा है। केवल हमारे देश में ही नहीं, दूसरे देश के कई विद्वानों और नेताओं ने भी महर्षि को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि वे संसार में एक नए युग का सन्देश लेकर आए थे। यद्यपि वे चले गए फिर भी वे जो मार्ग दिखा गए थे, वही मानव के मोक्ष एवं मुक्ति का मार्ग है। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में एक वैज्ञानिक क्रान्ति पैदा कर दी थी। उसके द्वारा ही आर्य समाज की स्थापना की थी। वे इस संगठन के द्वारा ही अपना सन्देश देश की जनता के घर-घर तक पहुंचाना चाहते थे। महर्षि से पूर्व कहा जाता था कि नारी एवं शूद्र दोनों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। महर्षि ने यह अधिकार दोनों को दिया और देश में छूआ-छूत की भावना को समाप्त करने के लिए एक अभियान प्रारम्भ किया। उनकी सबसे बड़ी देन अपने देशवासियों को यह थी कि उन्होंने उनके दिल में स्वाधीनता व स्वाभिमान की ज्वाला प्रज्वलित की और उसके साथ देश में स्वतन्त्रता संग्राम का आरम्भ हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी मृत्यु से आठ वर्ष पूर्व बम्बई में आर्य समाज की स्थापना कर दी थी और उनकी मृत्यु के समय तक इन आठ वर्षों में भारत के अनेकों स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी। जहां महर्षि का देहावसान हुआ वहां अजमेर में भी आर्य समाज स्थापित हो चुका था और इसके अतिरिक्त वहां पर परोपकारिणी सभा की स्थापना भी उनके काल में ही हो गई थी। वैदिक यन्त्रालय द्वारा अजमेर से भी पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हो गई थी। यह ठीक है कि महर्षि दयानन्द जी चारों वेदों का भाष्य पूरा करना चाहते थे परन्तु वह अपने जीवनकाल में यजुर्वेद का पूरा भाष्य तथा ऋग्वेद के कुछ मण्ड़लों का ही भाष्य कर पाए और उन्हें जब यह पता चला कि उन्हें जगन्नाथ द्वारा विष दे दिया गया है तो उनके मुंह से ये शब्द निकले थे कि जगन्नाथ तू नहीं जानता कि तूने यह कितना अनर्थ कार्य किया है। मेरा बहुत सा कार्य अभी अधूरा रह गया है। परन्तु फिर भी ऋषि को यह भी सन्तोष था कि जो ज्योति मैंने आर्य समाज के रूप में प्रज्जवलित की है वह भारत में ही नहीं एक दिन सारे संसार में फैल जाएगी और मेरे अधूरे कार्य को आर्य समाज पूर्ण करेगा। यह सच्चाई भी है कि महर्षि के बाद चारों वेदों का भाष्य किया गया और आज सभी स्थानों पर उपलब्ध है।

महर्षि दयानन्द योगी थे उन्होंने अपनी योगविद्या से जान लिया था कि अब वह बहुत देर तक नहीं रह सकेंगे। इसलिए उन्होंने अपने निर्वाण से पूर्व आर्य समाज की स्थापना कर दी थी। ताकि उनके द्वारा आरम्भ किए गए कार्य चलते रहें। महर्षि दयानन्द की इच्छा थी कि देश-देशान्तर में वेदों का प्रचार कार्य, स्त्री शिक्षा, दलितोद्धार आदि के कार्य चलते रहें। वेद ज्योति का प्रकाश घर-घर तक पहुंचाना उनका मुख्य उद्देश्य था। वेद प्रचार के कार्य के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया और इस काल में उन्होंने वेद की ज्योति को संसार में चारों ओर फैला दिया। यह प्रकाश निरन्तर बढ़ा गया इसलिए उन्होंने अपने शरीर छोड़ने का समय भी ज्योति पर्व दीपावली को चुना। ताकि इस पर्व को मनाते हुए लोग ज्योति के महत्व को समझे। इसके साथ ही महर्षि दयानन्द यह भी चाहते थे कि मेरी मृत्यु के शोक में लोग दुःखी न हो बल्कि वह इस पर्व को मनाते हुए मेरे अधूरे कार्य को पूर्ण करने का संकल्प लेते रहें।

आर्य बन्धुओं! प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस 27 अक्तूबर को आ रहा है। हर वर्ष यह पर्व आता है और फिर चला जाता है। इसलिए हमें इस पर्व पर चिन्तन करने की आवश्यकता है। आज हमें विचार करना है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज रूपी जो दीपक जलाया था उसे हमने कितना प्रज्जवलित रखा है। दीपावली के पर्व को मनाते हुए उस महर्षि दयानन्द रूपी ज्योतिस्तम्भ से ज्योति लेने का प्रयास करें ताकि हम उनके अधूरे कार्य को पूरा कर सके। हम सभी मिलकर संगच्छध्वं संवदध्वं की भावना को धारण करते हुए आस्था व विश्वास का दीपक जलाएं जिससे आर्य समाज की चतुर्दिक उन्नति हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी उसे पूर्ण करने के लिए हम एकजुट होकर कार्य करें। दीपावली का यह महान् पर्व हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है इस दिन महर्षि दयानन्द रूपी सूर्य का अस्त हुआ था। आओ इस पर्व को मनाते हुए, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चिन्तन करते हुए, शिवसंकल्प की भावना को अपने हृदय में उत्पन्न करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्यों को आगे बढ़ाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर हमारा कर्त्तव्य

ले०—श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस हर वर्ष दीपावली के पर्व पर आता है। प्रतिवर्ष सम्पूर्ण आर्य जगत् में इस दिन महर्षि दयानन्द को याद किया जाता है, उन्हें श्रद्धाजंलि दी जाती है, कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश ड़ाला जाता है। प्रतिवर्ष एक परम्परा के रूप में इसका वहन किया जाता है और अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली जाती है। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाना मात्र परम्परा का वहन करना नहीं है, न ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री करना है अपितु उस महामानव के कार्यों पर चिन्तन करते हुए विचार करना है कि हम महर्षि दयानन्द के इन कार्यों को किस प्रकार आगे बढ़ा सकते हैं। आर्य समाज की उन्नति के लिए क्या करें? पाखण्ड़ और अन्धविश्वास को समाप्त करने के लिए वेद के संदेश को घर-घर तक किस प्रकार पहुँचाएं। इन सब कार्यों पर विचार करते हुए हम महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस को मनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ें।

आर्य बन्धुओं! महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में जिस संस्था का निर्माण किया था, उसका नाम आर्य समाज है और इसी आर्य समाज के मुख्य कार्य का निर्धारण करते हुए आर्य समाज के छठे नियम में लिखा है कि-संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। महर्षि दयानन्द ने जीवन भर अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य से इस कार्य को सम्पन्न करने का प्रयास किया। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि यदि सुधार के मूल सूत्र को पकड़ लिया जाए तो सामाजिक सुधार के पथ पर अग्रसर पर होना सरल हो जाता है, क्योंकि मूल में सभी विचार एक बिन्दु पर पहुँच कर रूक जाते हैं, वह बिन्दु है सत्य को स्वीकार करना। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करने के लिए किसी एकांगी उपाय से काम लेना सार्थक नहीं था। जब तक समाज की चहुंमुखी उन्नति नहीं होगी तब तक समाज को सुरक्षित व विकसित करना संभव नहीं।

वर्तमान इतिहास के पृष्ठ इस बात के साक्षी हैं कि महर्षि दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया और सफलता के शिखर पर पहुँचाया। क्योंकि भावना और शुद्धि के साहचर्य का नाम ही मानव है। यही रेखा मनुष्य को शेष प्राणियों से अलग करती है। जब तक दोनों का समन्वित विकास न हो मनुष्य का विकास पूरा नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त बुराईयों पर कुठाराघात किया। जिस राष्ट्रीयता की हम रक्षा करना चाहते हैं वह अपने साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास की भूमिका के बिना सम्भव नहीं है।

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र की आत्मा को जगाने के लिए समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रखर प्रहार किए। महर्षि दयानन्द के आगमन से पहले यहाँ आकर ही सारा तर्कसंगत दृष्टिकोण, न्यायसंगत विचार, इस धार्मिक गढ़ से टकराकर चूर-चूर हो जाते थे, सारा साहस समाप्त हो जाता था। इस गढ़ में बुद्धि प्रवेश समय की अनिवार्य आवश्यकता थी। इसके लिए महर्षि दयानन्द ने बताया कि आज धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा है, धर्म से कल्याण होना चाहिए अपितु आज धर्म से अकल्याण हो रहा हो तो वह धर्म नहीं है। इसके लिए धर्म को बुद्धि की कसौटी पर परखना आवश्यक है। धर्म और सत्य पर्याय हैं, सत्य धर्म का शाब्दिक रूप है और धर्म सत्य का व्यवहारिक रूप। यही वेदों की शिक्षा है। वेद की शिक्षा के अभाव में हम सत्यासत्य की परीक्षा करने में असमर्थ हो गए हैं। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने हिन्दु समाज के सामने वेदों की महत्ता को प्रतिपादित किया। उन्होंने संस्कृति के स्रोत वेद को आधार बनाकर जीवन के क्षेत्र में उसके अनुसार ही कार्य करने की प्रेरणा दी, प्रचलित सभी मत-मतान्तरों का विरोध कर उनकी अज्ञानता को प्रकाशित किया और उन मतों के मानने वालों से सत्य को स्वीकार करने का आग्रह किया। अत: इस निर्वाण दिवस पर वेद की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए अपने आपको दृढ़संकल्प करना है।

महर्षि दयानन्द ने एकेश्वरवाद की पुन: स्थापना की। उनकी दृष्टि में एक ईश्वर ओ३म् , एक वेद ही धर्मग्रन्थ और एक ही प्रकार की उपासना पद्धति हुए बिना समाज में भारतीय धर्म से कभी कुरीतियां दूर नहीं हो सकती थी। ये ही तीन क्षेत्र थे जहाँ कुरीतियों, रूढ़िवाद, पाखण्ड़ और अन्धविश्वास ने भारतीय समाज को बुरी तरह से जकड़ा हुआ था। अत: जहाँ उन्होंने ईश्वर की एकमात्र सत्ता को स्वीकार करने की घोषणा की वहाँ उनके स्वरूप का विवेचन करते हुए उसके निराकार होने की मान्यता को महत्त्व दिया, जिससे मूर्तिपूजा, अवतारवाद पर कड़ी चोट हुई और परिणामस्वरूप उस समय सारे जगत् में हलचल मच गई। बुद्धिवादी लोगों को स्वामी जी का पक्ष उचित प्रतीत हुआ और वे उनके साथ हो गए। इसके विपरीत जो इस बात को सहन नहीं कर सके, अथवा स्वार्थवश सत्य को स्वीकार नहीं कर सके, ऐसा वर्ग विरोधियों के रूप में खड़ा हो गया। यह बात स्वाभाविक थी कि जो परम्परा हजारों वर्षों से बिगड़ती जाकर समाज के रक्त प्रवाह में, लोगों के संस्कारों में समा गई थी, उसे एकदम छोड़ पाना कोई साधारण कार्य नहीं था परन्तु देश की आत्मा को जगाने के लिए इस कठोर कार्य को करना भी आवश्यक था।

महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड़ के खण्डन में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। विद्वानों से शास्त्रार्थ किए और पौराणिकों के गढ़ काशी में जाकर हुंकार भर दी और काशी के विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी। काशी के विद्वानों को महर्षि दयानन्द ने सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए आह्वान किया था। परिणामस्वरूप पूरी काशी में हलचल मच गई थी। शास्त्रार्थ की तिथि निश्चित हुई और निश्चित तिथि को शास्त्रार्थ हुआ। पौराणिक विद्वानों की मण्ड़ली ने महर्षि दयानन्द को घेरने का प्रयास किया परन्तु अकेले महर्षि दयानन्द ने अपने अथाह ज्ञान और तर्कना शक्ति से परास्त किया। इस शास्त्रार्थ में छल-कपट का सहारा लिया गया, काशी नरेश स्वयं उन विद्वानों के साथ थे परन्तु अन्तत: सत्य

की विजय हुई। इस वर्ष उसी काशी शास्त्रार्थ के 150 वर्ष पूरे होने पर 11, 12 और 13 अक्तूबर 2019 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में काशी में भव्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया और समाज से पाखण्ड़ और अन्धविश्वास को दूर करने के लिए शास्त्रार्थ की परम्परा को पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया। महर्षि दयानन्द के इस कार्य से धार्मिक क्षेत्र का प्रभाव सामाजिक क्षेत्र पर भी होने लगा और धर्म के नाम पर समाज को जकड़ने वाली श्रृंखला टूटने लगी। आज हमें भी महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर संकल्प लेकर पाखण्ड़ और अन्धविश्वास में फंसे समाज को उस अन्धकार से बाहर निकालने का प्रयास करना है।

शिक्षा के विषय में चिन्तन करते हुए महर्षि दयानन्द ने विचार किया कि शिक्षा का अधिकार स्त्री और पुरूष दोनों को समान रूप से मिलना चाहिए। उस समय शिक्षा केवल पुरूषों के लिए और उनमें भी थोड़े से लोगों तक सीमित थी। स्त्रियों और शूद्र वर्ण के लोगों को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। महर्षि दयानन्द ने वेद के प्रमाण से और इतिहास की परम्पराओं से सिद्ध किया कि स्त्रियों को भी पुरूषों के समान ही विद्याध्ययन का अधिकार है। यह हमारी ऐतिहासिक परम्पराओं की विचित्रता है कि हमने स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम् और नारी नरकस्य द्वारम् की मान्यताओं को स्वीकार किया और प्रचारित किया। सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव उस समय अधिक बलवान था अथवा धार्मिक नेताओं की दृष्टि में यह बात उतनी महत्वपूर्ण नहीं थी। महर्षि दयानन्द ने इस परम्परा को तोड़ा और समान शिक्षा और समान सामाजिक अधिकार देने की घोषणा की। वे महिलाओं को शिक्षित करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द के आह्वान से ही नारी जाति को शिक्षा का अधिकार मिला और नारी शिक्षित हुई। भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी पर अजमेर में कहा था कि मैं प्रधानमन्त्री बनी हूं तो इसका श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है।

महर्षि दयानन्द ने जन्मगत जाति के बन्धन को तोड़कर गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार वर्णाश्रम व्यवस्था को स्वीकार करने का आग्रह किया परन्तु इस कार्य में उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई। महर्षि दयानन्द समाज को बाँटने वाले इस भंयकर रोग को समाप्त करना चाहते थे क्योंकि ऊंच-नीच, छूआ-छूत जैसी बुराईयां ही हमारी पराधीनता का कारण थी। महर्षि दयानन्द ने कर्मानुसार वर्णव्यस्था से इस रोग को मिटाने का प्रयास किया, परन्तु यह समाप्त नहीं हुआ। आजादी के पश्चात तो वोट बैंक की राजनीति के कारण यह रोग और भी बढ़ता गया। हर राजनीतिक पार्टी ने जातिवादी राजनीति को हवा देकर वोट लेने का कार्य किया और लोगों को बाँटने का कार्य किया। आज हमें भी महर्षि दयानन्द के इस कार्य से प्रेरणा लेकर समाज से भेदभाव को समाप्त करना है, जातिवाद को समाप्त करने का संकल्प लेना है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम में अप्रत्यक्ष रूप से भाग लिया था और उसकी असफलता के कारणों को समझा था। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र में एकत्व की भावना को जागृत कर देश में लोगों को समझाया कि विदेशी राज्य माता-पिता के समान सुखकारी होने पर भी स्वदेशी राज्य की बराबरी नहीं कर सकता। महर्षि दयानन्द का स्पष्ट मानना था कि सुराज्य की अपेक्षा स्वराज्य की प्रथम आवश्यकता है। इस बात को महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा और बुद्धिजीवियों को स्वराज्य प्राप्त करने की दिशा में प्रेरित किया। परिणामस्वरूप लोगों में स्वराज्य के प्रति प्रबल भावना जागृत हुई। इसी के आधार पर बाल गंगाधर तिलक ने घोषणा की कि-स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए लोगों को जागरूक किया। महर्षि दयानन्द जी ने अपने अनन्य शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा जिन्होंने लन्दन में इण्डिया हाऊस की स्थापना की। अनेकों नौजवान श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के सम्पर्क में आए और उन्हें देश की स्वतन्त्रता हेतू कार्य करने के लिए प्रेरित किया। महर्षि दयानन्द ने देश से गौहत्या को बन्द कराने का भरपूर प्रयास किया। उन्होंने गोकरूणानिधि नामक छोटी सी पुस्तक लिखकर आर्थिक व धार्मिक दशा को सुदृढ़ करने का यत्न किया। आज भी देश में गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए कई संगठन आवाज उठाते हैं परन्तु किसी भी सरकार में यह साहस नहीं है कि वे पूर्ण रूप से गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगा सके। महर्षि दयानन्द के इस कार्य से प्रेरणा लेकर हमें गौहत्या को रोकने के लिए कार्य करना है।

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र की एकता की दृष्टि से राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे, हिन्दी प्रैस लगाया और राष्ट्र की भाषा के बिना राष्ट्र मूक है, इस तथ्य से देशवासियों को अवगत कराया। इन सभी कार्यों को करने के पश्चात महर्षि दयानन्द ने इन कार्यों की निरन्तर आवश्यकता अनुभव करते हुए सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की और अपने सभी सामाजिक कार्यों का उत्तरदायित्व इस संस्था को सौंप दिया। आर्य समाज के आन्दोलन की प्रेरणा के फलस्वरूप क्रान्तिकारियों और समाज सुधारकों की न टूटने वाली श्रृंखला बन गई, जिसने देश में जनजागृति लाने का कार्य किया। आज राष्ट्र कैसे भूल सकता है कि राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव जैसे हजारों नवयुवकों को जिन्होंने जातिवाद, भाषावाद, प्रान्तवाद जैसी संकीर्ण प्राचीरों को लांघ कर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने आपको न्यौछावर कर दिया। यह आर्य समाज की विचारधारा ही है जो स्वयं के हित से उपर राष्ट्र का हित सर्वोपरि रखते थे। दूसरी ओर स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपतराय, गुरूदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे बलिदानी लोगों ने समाज की चेतना को जगाया और निरन्तर बनाए रखा।

आर्य बन्धुओं! आज हमें महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस के अवसर पर यही संकल्प लेना है कि हम महर्षि दयानन्द के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए उन कार्यों को आगे बढ़ाएं जिस पर चल कर समाज और राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस प्रतिवर्ष हमें ऋषि दयानन्द के कार्यों का स्मरण कराता है। दीपावली के पर्व पर महर्षि दयानन्द रूपी सूर्य अस्त हुआ था और अपने ज्ञान के प्रकाश से लाखों दीपकों को प्रकाशित कर गया था। आज समाज को पुनः उस प्रकाश की आवश्यकता है और वो प्रकाश हमारे जीवन में तभी आ सकता है जब हम इस पर्व को एक परम्परा के रूप मे न मनाकर एक संकल्प दिवस के रूप में मनाएंगे। महर्षि दयानन्द की विचारधारा और उनके सिद्धान्तों में इतना सामर्थ्य है कि वो समाज की दिशा को बदल सकते हैं। हमें केवल उस विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लेना है। इसलिए महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस हमारा यह परम कर्त्तव्य है कि हम सोये हुए समाज को जागृत करने की दिशा में कदम बढ़ाएं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की इच्छा

ले०—स्वर्गीय श्री सातवलेकर जी

यह लेख देश की आजादी से पूर्व सन् 1944 में सार्वदेशिक की पत्रिका में छपा था। वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता होने के कारण इसे प्रकाशित किया जा रहा है- सम्पादक आर्य मर्यादा

नरेश मंडल में सुधार

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध आचार्य श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जा का देहावसान भारतीय नरेशों में उचित सुधार करके उनको स्वराज्य स्थापना में लगाने के शुभ और महनीय प्रयत्नों के चलाने के कारण दीवाली के समय ही हुआ। यह बात सभी जानते हैं।

श्री स्वामी जी महाराज का कार्य केवल आर्य समाज के धार्मिक क्षेत्र की चारदीवारी के अन्दर ही सीमित नहीं था। भारतीय राष्ट्र का पुनरुद्धार धार्मिक सुधार द्वारा करना और इस साधन से आर्यों का वैदिक धर्मानुशासन से चलाया जाने वाला आस-मुद्रक्षिती का सार्वभौम साम्राज्य अति शीघ्र स्थापित करना ही एकमात्र प्रशंसनीय उद्देश्य श्री स्वामी जी महाराज का था। सूर्य चन्द्र वंशीय भारतीय राजा-महाराजाओं का सुधार करके उनको धार्मिक शासक तत्पर बनाने से शीघ्र ही भारत का आधा भाग सुधर सकता है, ऐसा विचार करके, सबसे प्रथम राजपूताना के उदयपुरादि नरेशों के सुधार करने के प्रयत्नों में वे लगे थे। इस कारण जिनकी आर्थिक हानि हुई, उनके द्वारा भयानक विष प्रयोग होने से श्री स्वामी जी का देहावसान हुआ। इस कार्य कारण भाव का विचार करने से भी उन्होंने थोड़े से दिनों में राजपूताना के राजाओं में कितना प्रचण्ड सुधार का कार्य किया था, इसकी कल्पना नहीं हो सकती है।

विष प्रयोग का कारण

विषप्रयोग करने के बिना उस स्थान के कुसंगियों को दूसरा कोई मार्ग रहा ही न था। इसलिए स्वार्थी, कुमार्गियों ने यह अन्तिम उपाय किया और एक महापुरुष का कार्य दीवाली के दीप प्रकाश के नीचे रहने वाले गाढ़ अन्धकार में अदृश्य सा हुआ। इससे भारतीय राष्ट्र की अपरिमित हानि हो चुकी है, इसलिये इस प्रसंग से इसका स्मरण करने की इच्छा है। इसका स्मरण करने से फिर किसी के मन में उनके भारतीय पुनरुत्थान के विचार स्फुरित हो जाएंगे और पुन: उनके कार्य का नये उत्साह से प्रारम्भ भी हो जाएगा।

श्री स्वामी जी का राजकीय ध्येय

हमारे मन के अन्दर जो महत्त्व का स्थान श्री स्वामी जी महाराज को मिला है, वह उनकी धार्मिक शिक्षापूर्वक राष्ट्रीय पुनरुत्थान की प्रचण्ड और सर्वाङ्गपूर्ण आयोजना के लिये ही है। यद्यपि आज वह आयोजना रही नहीं और चली भी नहीं है, परन्तु चलाना या न चलाना यह सर्वथा अनुयायियों की शक्ति पर अवलम्बित रहने वाली बात है। अत: हम सबसे पहले भारत राष्ट्र के पुनरुत्थान की अपूर्व आयोजना का निर्माण करने के लिये ही श्री स्वामी जी को 'ऋषि' कहते आये हैं। ऋषि वही होता है जो अन्य सारी जनता के पूर्व ही नया और उत्तम मार्ग ठीक ठीक रीति से देखता है और उस मार्ग को उद्घोषित भी करता है। जिसे अन्य लोग नहीं देख सकते, यही उनको दीखता है और जिसे अन्य लोग डर के मारे उद्घोषित नहीं कर सकते, उसे जो ऋषि होता है, वह सारी जनता के लिये बड़े वेग के साथ उद्घोषित भी करता है। ऋषि दयानन्द जी से पूर्व इनके समान किसी भी नेता ने भारत के पुनरुत्थान की इस प्रकार की निश्चित आयोजना नहीं की थी। यही उनकी श्रेष्ठ दूरदर्शिता का सुस्पष्ट चिन्ह है।

ईश-प्रार्थना में चक्रवर्ती राज्य

किसी मनुष्य का ध्येय, इष्ट अथवा हार्दिक काम्य क्या है, यह नि:सन्देह देखना हो, 'तो उनकी ईश्वर के पास प्रार्थना' क्या होती है, सो देखना चाहिये अन्य सभी व्यवहार मनुष्यों के साथ संबन्धित होते हैं, इसलिये उनमें अनन्त मर्यादाएं बीच में खड़ी हो जाती हैं, परन्तु ईश प्रार्थना के समय मनुष्य के साथ दूसरा कोई नहीं रहता। माता के पास पुत्र जैसे प्रेम के साथ निर्भय होकर जाता है, वैसे ही भक्त परमेश्वर के पास जाता है और प्रेम से जो अपने हृदय का अभीष्ट है, वह मांगता है। इस समय उसकी प्रार्थना के लिये कोई प्रतिबन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि भक्त और भगवान् के मध्य प्रतिबन्ध करने वाली दूसरी कोई वस्तु नहीं होती, अत: प्रार्थना में ही हर एक का हार्दिक अभीष्ट व्यक्त होता है। इसी नियम के अनुसार श्री स्वामी जी का ध्येय उनकी प्रार्थना पुस्तक 'आर्याभिविनय' में प्रकट हो गया है। देखिये उनकी प्रार्थनाएं किस भांति की थीं-

1. विद्या, शौर्य, धैर्य, चातुर्य, बल पराक्रम और दृढांग, धर्मात्मा न्याययुक्त अत्यन्त वीर पुरुष हमें प्राप्त हों, वैसे सुवर्ण रत्नादि तथा चक्रवर्ती राज्य और विज्ञानरूप धन को भी प्राप्त होवें.....।।३।। (पृ०२५-२६)

२. ...... आप हमको सरल चक्रवर्ती राजाओं की नीति को प्राप्त करो,...... हमको वह राज्य, वह नीति देओ,...... हमको सत्य विद्या से युक्त सुनीति देके साम्राज्याधिकारी सद्यः कीजिये। हम पर सहायता करो कि जिससे सुनीति युक्त हो के हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े।।२९।। (पृ० ६५-६७)

३. ...... आओ सब मिलके अपने सब दुखों का विनाश और अपने विजय के लिये ईश्वर को प्रसन्न करें, जो अपने को वह ईश्वर आशीर्वाद देवे, जिससे अपने शत्रु कभी न बढ़ें।।।२२।। (पृ० ७७)

४. ...... हम शत्रुओं को जीतने वाले हों, इस कारण से हमारा पराजय कभी नहीं हो सकता।।२६।। (पृ० ८६)

५. ..... पिता के समान हमारा पालन करो, हे भगवन्!..... आपकी उत्तम न्यायनीति में प्रवृत्त हो के वीरों के चक्रवर्ती राज्य को आप के अनुग्रह से हम प्राप्त हों।।४५।। (पृ० १३२-१३३)

६. ..... पुरुषार्थ को कभी मत छोड़ें, धर्मयुद्ध से शूरवीर होके..... बड़ा अखण्ड साम्राज्य प्राप्त करके सब मनुष्यों का हित कहें, सुनें और परमानन्द भोगें।।५२।। (पृ० 155-56)

७. हम लोगों का पठन-पाठन विद्या बढ़ाने वाला हो तथा.... हम सब संसार में सबसे अधिक प्रकाशित हों, अन्योन्य प्रीति से परमवीर्य पराक्रम से निष्कण्टक चक्रवर्ती राज्य भोगें, हममें सब पुरुष नीतिवान् और सज्जन हों,..... अच्छी प्रजा पुत्रादि, हस्त्याश्वगवादि, सर्वोत्कृष्ट विद्या, और चक्रवर्ती राज्यादि परमैश्वर्य को शीघ्र प्राप्त कर.....।।१।। (पृ० १६१-१६५)

८. हम लोग शत वर्ष तक देखें, जीवें, सुनें, कहें, कभी पराधीन न हों,..... सौ वर्ष के उपरान्त भी स्वाधीन ही रहें।।३७।। (पृ० २७९)

आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती राज्य

श्री स्वामी जी की बनायी प्रार्थनाएं ऐसी हैं। यहां उनका हार्दिक ध्येय उत्तम रीति से प्रकट हो रहा है। हम आर्यों में बल, बुद्धि, चातुर्य, शौर्य, वीर्य, पुरुषार्थ बढ़े और आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती राज्य अति शीघ्र इस भूमण्डल पर हो। जिस विकट राजकीय परिस्थिति में श्री स्वामी जी महाराज का जन्म हुआ था, जिस देश की विलक्षण शोचनीय परिस्थिति में श्री स्वामी जी के जन्म स्थान के-काठियावाड़ गुजरात के-लोग विदेश के साथ होने वाले व्यापार व्यवहार द्वारा कमीशन प्राप्त करके धनाढ़य बनने की ही केवल एकमात्र इच्छा कर रहे थे, उस समय वह अकेला लंगोट बंद ब्रह्मचारी तेजस्वी स्वामी घर बार छोड़कर पूर्ण असंग होकर आर्यों के अखंड चक्रवर्ती राज्य की शीघ्र स्थापना करने का उपाय ढूंढ रहा था। निःसन्देह यह उनका ऋषिदृष्टि की सिद्धता करने वाला पर्याप्त प्रमाण है।

उस समय के राजकीय नेतागण विदेशी सरकार की प्रार्थना और याचना करने में, अर्जियां करने और उनकी कृपा से कुछ नौकरियां प्राप्त करने में ही अपना जीवनोद्देश्य सफल समझ रहे थे, स्वतन्त्र स्वराज्य स्थापित करने की कल्पना भी उद्भूत नहीं हुई थी। आज से ७०-८० वर्ष पूर्व का राजनैतिक क्षितिज पाठक देखेंगे, तो उनको स्वतन्त्र स्वराज्य कहीं भी नहीं दीखेगा। हाथ जोड़कर अंग्रेज़ों से प्रार्थना करने का वायुमण्डल ही उस समय के राजकीय नेताओं के मन में था। ऐसे घोर समय में यह लंगोटधारी संन्यासी आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती राज्य स्थापित करके विचारों में मग्न होकर एकान्त सेवन कर रहा था।

जिस समय लोग विदेशी राज्य में रहना और उनकी नौकरियां करना ही अपना ध्येय मानते थे, उस समय जिसने आर्यों के अखण्ड चक्रवर्ती राज्य का मार्ग देखा, उसे भारतीय पुनरुत्थान का ऋषि न समझें तो दूसरे किसको वह मान दिया जाए?

चक्रवर्ती राज्य का मार्ग

श्री स्वामी दयानन्द महाराज ने केवल ईश्वर की प्रार्थना करके ही आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती राज्य इस भूमण्डल पर होने की संभावना कभी नहीं मानी थी, कोई वेद का वेत्ता ऐसा मान ही नहीं सकता। कोई सच्चा वेदवेता विदेशी राज्य के भीतर क्षण भर भी नहीं रह सकता। वेदज्ञान और पारतंत्र्य स्वीकार इनका सदा विरोध ही है। इसीलिये स्वामी जी आर्यों का स्वतंत्र और अखण्ड चक्रवर्ती राज्य अति शीघ्र इस भूमण्डल पर स्थापित करने के इच्छुक थे।

सब आर्य सायं प्रातः पवित्र होकर यही प्रार्थना करें इसीलिए यह आर्याभिविनय नामक तेजस्वी ग्रन्थ स्वामी जी ने निर्माण किया था। लोग यदि आतुरता से ऐसी प्रार्थनायें करेंगे, तो वैसे ही स्वराज्य शीघ्र प्राप्त करने का वायु मण्डल देशभर में बनेगा और जैसा वायुमण्डल बनेगा, वैसा सामूहिक प्रयत्न भी होगा। आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की स्थापना का प्रारम्भ इसी तरह ईश प्रार्थना में हो सकता है।

ईश्वर-उपासना

यहां पाठक कल्पना करें कि प्रत्येक घर में प्रातः सायं पारिवारिक प्रार्थना में घर के सब स्त्री-पुरुष सम्मिलित होते हैं, और वहां अति शीघ्र चक्रवर्ती राज्य स्थापना करने का बल ईश्वर

से मांगा जाता है। नगर के समाज-भवन में सब नागरिक एक मत से अपने स्वतन्त्र स्वराज्य की स्थापना के विघ्न दूर करने की प्रार्थना करते हैं। इसी तरह प्रांतों और राष्ट्र के वार्षिक महोत्सव में लाखों भारतवासी सम्मिलित होते हैं और अपने चक्रवर्ती राज्य की शीघ्र स्थापना करने की प्रार्थना ईश्वर से करते हैं, तो उस राष्ट्र की मानसिक भूमिका में राजकीय स्वतन्त्रता का वायुमण्डल कितना बन सकता है। पाठक स्वामी जी की मानसिक तैयारी करने की इस आयोजना का महत्व सोचें इस भांति राष्ट्रीय मन तैयार हुआ तो उस मन के द्वारा हर एक दिशा से स्वतन्त्रता प्राप्त करने के प्रयत्न होंगे और देश शीघ्र ही स्वतन्त्र होगा, इसमें कोई संदेह ही नहीं है।

राष्ट्र का संगठन

केवल मन के विचारों में उक्त प्रकार स्वातंत्र्य प्रेम उत्पन्न होने से स्वराज्य स्थापना नहीं हो सकती, यह तो स्वामी जी जानते ही थे। इसलिये उन्होंने भारतीयों के संगठन का कार्यक्रम भी तैयार किया था।

नगर नगर में आर्य समाज की स्थापना करना और वहां धर्मार्यसभा, विद्यार्यसभा, न्यायार्यसभा तथा राजार्यसभा आदि संस्थाएं स्थापित करके अपने ग्राम का सारा कार्यव्यवहार स्वयं चलाना। वेद मंत्रों द्वारा इन सभाओं के स्थापन करने का उपदेश श्री स्वामी जी ने अपने सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रंथों में पर्याप्त परिश्रमपूर्वक दिया है, जो हर एक इस समय भी देख सकता है इसलिये उनके इस विषय के वचन यहां उद्धृत करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जिसने सत्यार्थ प्रकाश, वेद भाष्यादि देखा है, उनको इन सभाओं की स्थापना करने के उपदेश का ज्ञान है। अतः अब हम कहते हैं कि आर्य समाज की इन सभाओं का कार्य क्या हैं:-

१. धर्मार्यसभा-वेद में कथित मानवधर्म का विचार यह संस्था करे और प्रत्येक सदस्य अपनी धर्ममर्यादा में सुस्थिर रहता है या नहीं यह देखे और समझाकर सब लोगों को धर्म में रखे और धर्म में लाने का यत्न करे। वेद का अर्थ करना, वेदप्रचार करना आदि कार्य इस सभा के हैं।

जनता को अधर्म से बचाना, संस्कारों से सबको सुसंगठित करना सत्यधर्म का प्रचार करके वेद के शुभ उपदेशों से सब लोगों को उन्नत करना आदि कार्य इस धर्म सभा का है।

२. विद्यार्य सभा-इस विद्यासभा द्वारा अपने बालक-बलिकाओं के विद्याध्ययन का सुयोग्य प्रबंध करना है। प्राथमिक शिक्षा से प्रारंभ होकर अन्तिम उच्च शिक्षा तक का सारा प्रबन्ध इस विद्या सभा का कार्य है। ज्ञान-विज्ञान, उद्योग, कलाकौशल आदि सब आवश्यक १४ विद्याओं और ६४ कलाओं की शिक्षा अपने युवकों को देना इस विद्या सभा का कार्य है। कोई आर्य बालक या बालिका विदेशी राजप्रबंध द्वारा चलने वाली, परतन्त्र मन बनाने वाली, शिक्षा न लेवे और आर्य विद्वानों द्वारा निश्चित की हुई, आर्य विद्वानों द्वारा चलाये जाने वाले गुरुकुलों में प्राप्त होने वाली, आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की जिससे अति शीघ्र स्थापना हो सकती है, ऐसी सुशिक्षा आर्यों के तरुणों को प्राप्त हो, यह उद्देश्य इसमें श्री स्वामी जी का था। जर्मनी में आर्य युवकों को भेजकर वहां की विज्ञानविद्या प्राप्त करना भी स्वामी जी का उद्देश्य था।

३. न्यायार्य सभा-आर्यों के अपने झगड़े, आपस के कार्यों के झगड़े विदेशी राजा की अदालतों में नहीं जाने चाहियें। आर्यों के झगड़े आर्यों के द्वारा ही निपटाये जायें, आर्यों के झगड़े आर्यों के द्वारा ही निपटाने वाले म्लेच्छ नहीं हो सकते। यह शुद्ध और सरल आर्यत्व की दिशा है। इस लिये श्री स्वामी जी महाराज ने 'न्यायार्य सभा' स्थापित करके इस सभा द्वारा आर्यों के आपस के झगड़ों का निपटारा स्वयं आर्यों द्वारा कराने की प्रथा शुरु करने की आज्ञा दी थी और यह आज्ञा वेदानुकूल ही थी।

४. जो कार्य 'धर्मसभा, विद्यासभा और न्याय सभा के कार्यक्षेत्र में नहीं आते, उन सब शेष कार्यों के लिये 'राजार्य सभा है।' आर्यों के राजकीय क्षेत्र में जो स्वाभाविक न्यायानुकूल और नागरिकत्वादि अधिकार और हक हैं, उनका संरक्षण करना इस सभा का कार्य है।

५. गोरक्षा से ही भारतीय किसानों की तथा भारतीय कृषि की उन्नति हो सकती है, यह जानकर श्री स्वामी जी महाराज ने ''गौकरुणानिधि'' नामक ग्रंथ निर्माण किया और आर्यों को गो रक्षा के लिये पर्याप्त प्रयत्न करना चाहिये, ऐसा शुभादेश दिया। गोरक्षा में केवल गौ की ही रक्षा आती है, ऐसा नहीं अपितु वेदानुकूल कामदुग्धा और घटोघ्नी गौ निर्माण करना भी इस समाज का हेतु निःसंदेह है। गोदुग्ध भूमि के ऊपर का श्रेष्ठ अमृत है, इससे भारतीय जनता वंचित कभी न रहे, यह श्री स्वामी जी का गो आदि की रक्षा करने में विशाल हेतु था। आर्य गोदुग्ध पान करके नीरोग और बलवान् बने और स्वराज्य स्थापना का कार्य ज़ोर से करें, यह उद्देश्य यहां स्पष्ट है।

६. भारतवर्ष में क्या और संपूर्ण पृथ्वी पर क्या, प्रजानुकूल राज्यशासन ही जनता का सच्चा हित करने में समर्थ होगा, यह जानकर आर्य समाज की स्थापना और नियमोपनियमावली श्री स्वामी जी ने ऐसी बनाई कि जिससे प्रजानियन्त्रित, प्रजासम्मत, प्रजा की सम्मति से चलने वाली, प्रजा के प्रतिनिधियों की बहु

सम्मति से संचालित होने वाली कार्य प्रणाली आर्यों की बने और ऐसी संस्था में कार्य करने वाले आर्य भारतीय शासन संस्था के लिये सुयोग्य सदस्य बनें। आर्य समाज के सब कार्य इसी नियमानुसार होने योग्य कार्य प्रणाली स्वामी जी ने बनायी थी, यह उनकी दूरदर्शिता ही है।

स्वावलम्बन

आर्य समाज नामक संस्था के अधीन धर्म सभा, न्यायसभा और विद्या सभा कार्य करने लग जाती और जैसा कि स्वामी जी महाराज ने सोचा था, वैसा ये सारी संस्थाएं कार्य करने में समर्थ होती तो आज आर्यों के अधीन कितना अधिकार आ जाता, यह भी इस स्थान पर जानने योग्य है।

न्यायार्य सभा कार्य करने वाली हो गयी, तो सरकारी अदालतों का पूर्ण बहिष्कार न करते हुए और न बोलते हुए हो सकता है। विद्यासभा कार्यक्षम हो गयी, तो सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार आप ही आप हो सकता है। विद्यासभा द्वारा १४ विद्या और ६४ कलाओं की शिक्षा शुरु होने पर अपने सब हुनर शुरु होने के कारण विदेशी वस्तुओं का स्वयं बहिष्कार हो जाता है। जो अपने पुत्रों को अपने स्वतन्त्र गुरुकुल विद्यालयों में पढ़ाते, अपने हुनर से बने वस्त्रादि निर्माण करके उनको ही पहनाते, अपनी न्यायसभा द्वारा अपने झगड़े निपटाते ऐसे पूर्ण स्वतन्त्रता प्रिय आर्य सरकारी नौकरी से अपना जीवन कभी अपवित्र नहीं करेंगे और विदेशी सरकार की पदवियां धारण करके भी अपने आपको कभी कलंकित नहीं करेंगे। क्योंकि वैदिक धर्मी का विदेशी सरकार के आधीन रहना ही असंभव है। इस दिशा से कार्य होता तो दिन प्रतिदिन आर्य सच्चे आर्य ही बनते जाते।

श्री स्वामी जी द्वारा सभात्रयनिर्मित स्वयं शासन आर्य समाज की संस्थापना से यह कार्य उक्त प्रकार अपने आप ही होने वाला था। स्वामी जी का यही उद्देश्य था, यह बात उनके ग्रन्थों में सर्वत्र स्पष्ट दिखती है कि यदि यह श्री स्वामी जी का उद्देश्य इस समय सफल होता, तो श्री महात्मा गांधी जी को अपने पंच बहिष्कार पुकारने का अवसर ही न मिलता, क्योंकि आर्य समाज द्वारा वही बहिष्कार महात्मा गांधी जी के भारत भूमि में अवतीर्ण होने के पूर्व ही सिद्ध होकर रहते और महात्मा गांधी जी को दूसरा कार्यक्रम सोचना पड़ता। परन्तु वैसा नहीं हुआ।

१. धर्म सभा द्वारा विदेशी धर्मप्रचार पर प्रतिबंध।

२. न्यायसभा द्वारा अपने झगड़े स्वयं मिटाने के कारण विदेशी सरकार की अदालतों का बहिष्कार हो जाता है।

३. विद्यासभा द्वारा अपने गुरुकुलों के संचालन द्वारा अपने आर्य युवकों की शिक्षा होने के कारण विदेशी सरकार के शिक्षणालयों का बहिष्कार होता।

४. उक्त विद्यालयों में ६४ कलाओं की शिक्षा होने के कारण अपने लिये आवश्यक वस्तुओं के निर्माण होने से विदेशी वस्त्रादिकों पर बहिष्कार होता,

५. आर्यों में अपना स्वतंत्र चक्रवर्ती राज्य अति शीघ्र स्थापना करने की तीव्र इच्छा प्रकट होने के कारण, विदेशी सरकार को अपनी शक्ति प्रदान न करने की ओर जनता की भावना होने के कारण विदेशी सरकारी नौकरियों का बहिष्कार होता,

६. इसी उक्त कारण से उनकी पदवियों का बहिष्कार होता,

ये सब बहिष्कार जो महात्मा गांधी जी ने सन् १९२१ में पुकारे थे, वे ही बहिष्कार श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने पुकार करते हुए कार्य व्यवहार में लाने की आयोजना सत्तर वर्ष पूर्व ही शुरू कर दी थी। जिस समय कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था, उस समय श्री स्वामी जी महाराज इस आयोजना को तैयार करके आर्य समाज द्वारा प्रचलित करने के विचार में लगे हुए थे। यही उनके ऋषित्व का चिन्ह है।

आर्यों का स्वयं शासन

नगर और ग्राम में उस नगर का आर्य समाज, प्रान्त के नियन्त्रण के लिये प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा और अखिल भारत का नियंत्रण करने के लिये अखिल भारतीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, इस तरह ग्राम से प्रारम्भ होकर अखिल भारत वर्ष का नियन्त्रण पूर्वोक्त धर्म-विद्या-न्याय आदि सभाओं द्वारा स्वामी जी के आदेशानुसार होता, तो पाठक स्वयं जान सकते हैं, कि यह एक आर्यों का 'स्वयं शासन' इस आर्य भूमि में आप ही आप शुरु हो जाता। इस भरतखण्ड में विदेशी सरकार का राजकीय क्षेत्र में शासन होते हुए भी, धर्म-विद्या-न्याय उद्योग आदि क्षेत्रों में आर्यों का स्वयंशासन शुरु हो जाता और यह एक आर्यों का समान बराबरी का राज्यशासन (Parallel Government) न डंका बजाते हुए और न बोलते हुए शुरू हो जाता और आज जो राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के अध्यक्ष अथवा सर्वाधिकारी श्री महात्मा गांधी जी एक ओर दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि श्री वायसराय होते हैं, और बराबरी के नाते से राज्य शासन के विषय में निर्णय कर रहे हैं, वैसी ही अवस्था, अर्थात् एक ओर सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा अध्यक्ष और दूसरी ओर वायसराय रह कर भारतवर्ष के शासन का विचार बराबरी के नाते से करते। श्रीस्वामी जी महाराज ने जिस समय अपने आर्य समाज की स्थापना की थी, उस समय उनके सामने यह दृश्य था।

प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो

ले० श्री धर्मवीर विद्यालंकार पूर्व आचार्य महाविद्यालय टंकारा

प्रसिद्ध है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1883 की दीवाली के संध्यावेला में अपने प्राणों का स्वेच्छा से उत्सर्ग करने से पूर्व उपरिलिखित वाक्य बोलता था। प्रकाण्ड विद्वान् और परम नास्तिक गुरुदत्त विद्यार्थी, महर्षि के भव्य भाल पर दिव्य ज्योति को अनुभव कर दृढ़ आस्थावान् आस्तिक बन गया था।

संसार का प्रत्येक प्राणी शैशव से मृत्यु पर्यन्त अपने लिए सुख-समृद्धि की कामना की पूर्ति में सतत प्रयत्नशील है। साथ ही अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति में परमपिता परमात्मा की कृपा के लिए प्रार्थना करता है।

शैशव में सुन्दर खिलौने, चमकीले वस्त्र और स्वादिष्ट भोजन के लिए अपने माता-पिता से मचलता है, युवावस्था में नये, खर्चीले, निरर्थक शौक पूरा करने के लिए आग्रह करता है। और बड़ा होने पर नौकरी पाने या मिल जाने पर उसमें निरन्तर उन्नत होने की इच्छा करता है। अथवा व्यापारी बन व्यापार को स्थिर करने, तदुपरान्त उससे प्रचुर लाभ पाने की कामना करता है। मार्ग में उत्पन्न हुई बाधाओं पर विजय पाने की आकांक्षा करता है। सफलता पर प्रसन्न होता है। असफलता पर भगवान् से सफल होने की प्रार्थना करता है। उन्नत हो जाने पर, अन्य इच्छाओं की पूर्ति में व्यस्त हो जाता है और अगर वह आस्तिक और धर्म परायण है, तो सदा कदम-कदम पर भगवान् का धन्यवाद करता है।

जन्म, शिक्षा, विवाह, सन्तान, पारिवारिक सुख-सुविधा के छोटे बड़े सभी उपकरण, यश, सम्मान, पद, सभी कुछ पा लेने की इच्छा करता है। फिर साथ ही परम-पिता-परमात्मा से प्रार्थना करता है-''प्रभु मेरी इच्छा पूर्ण हो।'' यह अनुष्ठान के अनन्तर पुरोहित जन आशीर्वाद देता है-''सफला सन्तु यजमानस्य कामा:, तब वह हृदय में अपार आनन्द अनुभव करता है।

ऐसा कभी नहीं सुना कि किसी ने कहा हो-प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो।'

देव दयानन्द के प्रभु ने कौन-सी अपनी इच्छा को पूर्ण किया है?

दन्त कथाओं में सुनते हैं कि देवताओं द्वारा मनुष्यों की इच्छाएं पूर्ण की जाती है। यहां पर, लोक व्यवहार से सर्वथा विपरीत कार्य महर्षि दयानन्द कर रहे हैं। अर्थात् प्रभु की इच्छा पूर्ण होने की बात कह रहे हैं। प्रभु की वह इच्छा क्या थी, यह गम्भीरता से विचारणीय है।

सर्वशक्तिमान परमैश्वर्यशाली, प्रभु संसार के समस्त प्राणियों को अनन्त सुख प्रदान कर रहे हैं, उनकी इच्छाओं को पूर्ण कर रहे हैं, उस प्रभु को महर्षि कह रहे हैं। -''प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो।'' कितने गहरे आश्चर्य की बात है।

(प्रभु तेरी......)

महर्षि दयानन्द के अन्तिम दिनों की अवस्था का स्मरण करता हूं। वे विगत दो मासों से बीमार है। शैय्या पर शान्त, धीर, गम्भीर मुद्रा में लेटे हैं। चक्रवर्ती अंग्रेजी राज्य के सर्वोत्तम निरीक्षण में श्रेष्ठतम चिकित्सक-सिविल सर्जन-द्वारा ही सतत उपचार हुआ है। चिकित्सा के साथ-साथ शरीर पर फोड़े-फुंसियां ऐसे निकल आए हैं, जैसे निर्मल आकाश में, अमावस्या की रात्रि में, नक्षत्र समूह दिखाई देने लगता है। तीव्र पेचिश से शरीर एकदम शिथिल हो चुका है। पीड़ा की तीव्रता की तनिक सी झलक महर्षि के चेहरे पर नहीं हैं। अर्धमूर्च्छित सी अवस्था है। चेतना होने पर अथवा निद्रा टूटने पर मात्र वेद-मन्त्रों का उच्चारण और प्रभु के ''ओ३म्'' नाम का जाप सुनाई देता है। जोधपुर से आबू और आबू से अजमेर के परिवर्तित, स्वास्थ्यवर्धक जलवायु और अन्त में परम भक्त शिष्य डाक्टर... के उपचार का स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं हुआ है।

महर्षि को अनेकों बार धोखे से विष दिया गया। उन्होंने यौगिक क्रियाओं से अपना उपचार स्वयं ही कर लिया। विष को शरीर से बाहर फैंक, शरीर को शुद्ध और स्वस्थ कर लिया। आज दो मास से यौगिक क्रियाओं का तथा भारतीय औषधियों का कुछ भी लाभ नहीं हो रहा। सिविल सर्जन महोदय की ही एक मात्र चिकित्सा से लाभ तो नहीं हुआ, रोग बढ़ता गया यह विशेष चिन्ता का विषय है।

प्रश्न है, उस समय-जब मर्ज बढ़ता जा रहा था-उनका चिकित्सक क्यों बदला न गया? जब ला-इलाज हो गए, तभी

सिविल सर्जन महोदय ने अपना उपचार छोड़ा। दैनिक जीवन में हम देखते हैं कि साधारण लोग भी, एक चिकित्सक के उपचार से लाभ न होने पर कितने ही चिकित्सक बदल लेते हैं। फिर महर्षि का चिकित्सक क्यों न बदला गया। राजस्थान के अनेकों भक्त महाराजाओं के पास यशस्वी चिकित्सकों का अभाव न था। इसके अतिरिक्त अनेकों समृद्ध, वैभवशाली सेठ साहूकार भी महर्षि के भक्त थे। उनके परीक्षित वैद्य विशारदों को महर्षि की चिकित्सा करने का अवसर क्यों न दिया गया। महर्षि की भक्त श्रेणी में अनेकों उच्चकोटि के चिकित्सक थे। उनमें से एक भी महर्षि की चिकित्सा क्यों न कर पाया। वह कौन-सी शक्ति थी, जिसके सामने सभी सामर्थ्यवान, शक्तिशाली मनुष्य कुछ उपचार न कर पाये और मात्र मूक-दर्शक बने रहे।

इतिहास चुप है उस समय के महापुरुष, राज-पुरुष, राजवंशी, श्रेष्ठी भक्त, धर्मात्मा, मित्र, शत्रु सभी चुप हैं। तब महर्षि क्या अनुभव करते होंगे? उनके अन्तःकरण में उस प्रत्येक व्यक्ति का चित्र उभर आया होगा-जिन वीरों को उन्होंने मातृ-भूमि की रक्षा के लिए तैयार किया था, जिन धर्मात्माओं को सच्चे वैदिक धर्म के प्रतिपादन-प्रचार-प्रसार के लिए तैयार किया था, जिन कर्म वीरों को गौ-वेद-रक्षार्थ आत्म बलिदान के लिए सन्नद्ध किया था, जिन विद्वानों को संसार से अज्ञानान्धकार मिटाने के लिए जगाया था, जिन पतितों दलितों को उठाकर उनके जीवन में प्राण फूंके थे, जिनको नारी शिक्षा के प्रसार और समाज की अन्ध कुरीतियों को दूर करने का प्रण कराया था, वे सब आज तक असमर्थ रहे हैं, निस्तेज और मूक है अब उनके हृदयों में जागृत देश-धर्म-संस्कृति पर मर मिटने का दृढ़ व्रत का लेश भी दिखाई नहीं दे रहा।

ऐसे समय में महर्षि दयानन्द प्रभु से कह रहे हैं....''प्रभु, मेरी अपनी तो कोई इच्छा नहीं। शरीर से, मन से, प्राण से आत्मा से भरपूर परिश्रम कर एकमात्र आपकी आज्ञाओं का पालन ही किया है। अज्ञानियों को सच्चा ज्ञान दे रहा हूं, भटकों को सत्यमार्ग दिखा रहा हूं, निर्बलों को सत्य-बल प्रदान कर सबल बना रहा हूं, निर्धनों को सच्चे धन का अधिपति बना रहा हूं। प्रभु, तेरी ही तो इच्छा पूरी कर रहा हूं। अपने लिए नहीं, तेरी प्रजा के लिए जी रहा हूं। अभी भी गाय रक्षा के लिए पुकार रही है, अभी वेदों का पूर्ण ज्ञान जन-जन में प्रसारित प्रकाशित नहीं हुआ है, अभी भारत का अधिकांश मानस कुरीतियों-रूढ़ियों से छूटा नहीं, भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ, माताएं घोर यातनाएं सह रही है। इरानियों और कुरानियों की दुरभिसंधियां दिनों-दिन बढ़ रही हैं। कितना अधिक काम शेष पड़ा है। फिर भी आप मुझे बुला रहे हैं? ये मेरे भक्त हतप्रभ एवं मूक क्यों हैं?

''अस्तु, मैं यहां से चलता हूं। मुझ से इतना ही काम आपने इतने समय में कराना था। मैंने भारत वासियों को जगाया है। विश्व के मानव भी अंगड़ाई लेकर उठने लगे हैं। सब जाग चुके हैं। ये भारतवासी मचले बने पड़े हैं। मैं उन्हें और अधिक सन्मार्ग पर लाऊं, अब आपकी ऐसी इच्छा नहीं है।''

तब महर्षि ने भूमि पर गोबर का लेप कराया। उस शुद्ध भूमि पर लेटें। मन्त्रों द्वारा प्रभु का आह्वान किया समय, दिन पक्ष पूछा। सस्वर वेद पाठ किया फिर धीर-गम्भीर-शान्त स्वर में बोले-''प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो।'

क्या यही वह प्रभु की इच्छा थी जिसे पूरा करने में महर्षि ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण बिताया और जिसके अनुसार ही उन्होंने यह संसार छोड़ा।

इस घटना ने, इस एक छोटे से वाक्य ने अनेकों प्रश्न उभार दिए हैं। आइए भक्त-जन, विद्वज्जन, महामनीषी आइए धर्म परायण, अर्थ, परायण कर्म-परायण, जरा विचारिये और हम श्रद्धालुओं को समझाइए।

महर्षि-स्तवन

ले०-स्व, श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज

विद्या-भानु प्रकाशित करके, जिसने तम का नाश किया।
मूढ़-प्रजा का मोह मिटा कर, फिर उन्नति-विश्वास दिया।।
जिसने सुख को स्वप्न समझ कर, जनता का उपकार किया।
गुरु के ऋण को जीवन देकर, शिर से अन्त उतार दिया।।
जिसने वेदों के दिनमणि को, सम्प्रदाय धन-मुक्त किया।
वेद-रत्न को खोज धरा से, अथवा शोभा-युक्त किया।।

जिसने सारी सुप्त प्रजा को, दे उपदेश प्रबुद्ध किया।
स्वार्थ, हठी, दुराचारों से, डट कर सत्तत युद्ध किया।।
जिसने मातृ-भूमि की लज्जा, मन में अपने अनुभव की।
पराधीनता रोग छुड़ाने की, औषधि सच्ची थी, दी।।
आओ उस के पद-चिन्हों पर, चल कर सुयश बढ़ा देवें।
ऋषि दयानन्द की उस बेल को, ऊपर और चढ़ा देवें।।

निष्कलंक दयानन्द

ले०—माता स्व. मीरायति जी ज्वालापुर

महर्षि दयानन्द के जीवन में उन पर उनके विरोधियों ने कितने ही कलंक लगाने की कोशिश की। परन्तु महर्षि जी पूर्ण ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी और ईश्वर भक्त होने के कारण विरोधियों के भरपूर प्रयत्न करने पर भी निष्कलंक जीवन ही बिता गये। जिस समय महर्षि जी ने भौतिक देह का त्याग कर ब्रह्मलोक को प्रस्थान किया तो रावल पिंडी का एक ब्राह्मण यह समाचार सुन कर जोर-जोर से रोने लग गया, लोगों ने पूछा जब महर्षि जी यहां आये थे तो आप उनका सबसे अधिक विरोध करते थे और उनको अपना सब से बड़ा शत्रु मानते थे। परन्तु अब जब कि वह इस संसार से चले गए तो आप जोर-जोर से रो रहे हैं अत: आपको तो प्रसन्न होना चाहिए था। इस पर वह ब्राह्मण कहने लगा मैं इसलिए नहीं रोता कि दयानन्द मर गया बल्कि मैं तो इसलिए रोता हूं कि वह निष्कलंक मर गया है और अब उसके बाद उसका लगाया हुआ आर्य समाज और उसके ग्रन्थ जब तक सूरज चांद हैं पाखण्ड का खण्डन करते रहेंगे और हम कोई उसका जवाब न दे सकेंगे। परन्तु दुश्मन बात करें अनहोनी की लोकोक्ति के अनुसार महर्षि जी के जीवन पर घृणित कलंक लगाने की चेष्टा उनके शत्रु करते रहे। परन्तु भगवान अपने भक्त की हर समय रक्षा करते रहे।

काशी के पण्डितों ने एक दुष्टा स्त्री को महर्षि के पास भेज कर कलंक लगाना चाहा परन्तु महर्षि उनकी चाल को भांप गए और पण्डित लोग इस बार भी महर्षि को कलंक लगाने में असफल रहे। पाठक वृन्द महर्षि दयानन्द जी महाराज का सारा जीवन निष्कलंक ही व्यतीत हुआ। पुरातन काल के दो चार महापुरुषों के जीवन की ओर जब दृष्टिपात करते हैं तो इतिहास भी इस बात की साक्षी दे देता है कि उनके जीवन को कलंक लगा। विश्वामित्र के पास उर्वशी अप्सरा आई इत्यादि मैंने केवल संकेत ही किया है आप विद्वान् पाठकवृन्द सब कुछ भली भांति जानते हैं।

परन्तु हमारे कुछ भाईयों ने जो हमारे महापुरुष हुए हैं उनको वैसा ही अपनी अल्पमति के कारण कलंकित किया है आप भागवत पुराण को पढ़ कर देख लीजिये। परन्तु ऋषि जी ने आकर इन महापुरुषों के विषय में लेखनी चलाई और उनके ऊपर झूठे जो दोषारोपण किये गये हैं उनको अपनी प्रखर बुद्धि से धोने का प्रयास किया। आशा है आप लोग पढ़कर लाभान्वित होंगे।

महर्षि जहां स्वयं निष्कलंक जीवन बिता गए वहां उन्होंने पूर्वज मुनियों पर लगे हुए कलंक जिनमें भगवान कृष्ण पर जितने कलंक उनके भक्तों की तरफ से लगाये जाते हैं और श्रीमद्‌भागवत पुराण में उन के जीवन को जिस घिनौने तरीके से कलंकित किया गया है इसका उदाहरण संसार भर में नहीं मिलता। ईसाई और मुसलमान प्रचारक भगवान कृष्ण पर भी चीर हरण, राधा रमन, गोपी वल्लभ आदि लगे आरोपों को लेकर हिन्दुओं को अपने पूर्वजों के जीवनों से घृणा उत्पन्न कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं और हजारों लाखों हिन्दू भगवान कृष्ण पर लगाये इन कलंकों को ठीक समझते हुए ईसाई और मुसलमान बनते रहे हैं। परन्तु महर्षि जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि कृष्ण जी का जीवन चरित्र महाभारत में आप्त पुरुषों जैसा लिखा है कि उन्होंने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई अधर्म का काम नहीं किया।

पुराणों में एक कथा आती है कि प्रजापति अपनी लड़की के पीछे भागा और उसको गर्भवती कर दिया। इससे कितना भयानक कलंक हमारी सभ्यता पर आता है? परन्तु महर्षि जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में इसका अत्यन्त उत्तम रीति से अर्थ करके हमारी प्राचीन सभ्यता पर लगे इस कलंक को बिल्कुल साफ कर दिया। महर्षि जी लिखते हैं।

प्रजापति कहते हैं सूर्य को और उसकी दो कन्यायें हैं। एक प्रकाश दूसरी उषा। क्योंकि जो जिससे उत्पन्न होता है वही उसकी सन्तान कहलाता है। इसलिए उषा जो कि तीन चार घड़ी रात्रि शेष रहने पर पूर्व दिशा में लाली दिखाई देती है वह सूर्य की किरण से उत्पन्न होने से इसकी कन्यायें कहलाती हैं। उनमें उषा के सम्मुख जो प्रथम सूर्य की किरण जा के पड़ती है वही वीर्य स्थापना के समान है उन दोनों के समागम से दिवस रूपी पुत्र उत्पन्न होता है।

पुराणों की इस कलंकित कथा को अलंकार रूप निरुक्त में इस प्रकार खोला गया है। पिता के मान जल रूप मेघ है। इसकी पृथ्वी रूप दुहिता अर्थात् कन्या है क्योंकि पृथ्वी की उत्पत्ति जल से होती है। अत: जल रूप मेघ वृष्टि द्वारा जल का वीर्य को धारण करता है। तब इस पृथ्वी में गर्भ रहकर औषधि वनस्पति आदि अनेक अन्न, पुष्प, फल आदि उत्पन्न होते हैं। इस कलंक को वैज्ञानिकता से खोज कर महर्षि ने प्रजापति को निष्कलंक कर दिया है।

एक और कलंक इन्द्र अहिल्या की कथा में लगाया गया है देवों का राजा इन्द्र देव लोक में देह धारी देव था। वह गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या के साथ जार कर्म किया करता था। एक दिन जब उन दोनों को गौतम ने देख लिया, तब इस प्रकार शाप दिया है इन्द्र तू हजार भग वाला हो जा और अहिल्या को शाप दिया कि तू पत्थर हो जा। परन्तु जब उन्होंने गौतम से प्रार्थना की कि हमारे शाप का मोक्ष कैसे होगा। तब इन्द्र को तो कहा कि तुम्हारे हजार भग की जगह हजार नेत्र हो जावें, और अहिल्या को वचन दिया कि फिर अपने स्वरूप में आ जावेगी, इस प्रकार पुराणों में यह कथा बिगाड़ कर लिखी है। सत्य ग्रन्थों में ऐसा नहीं लिखा अत: इस प्रकार लिखा है। सूर्य का नाम इन्द्र है, रात्रि का नाम अहिल्या

तथा चन्द्रमा गौतम है। यहां रात्रि और चन्द्रमा स्त्री पुरुष के समान रूपकलंकार हैं। (वैसे आजकल भी आमतौर पर पूर्णमासी की रात को सुहागिन रात कहते हैं) चन्द्रमा अपनी स्त्रीरात्रि से सब प्राणियों को आनन्दित करता है और उस रात्रि का पति आदित्य अर्थात् सूर्य है। जिसके उदय होने से रात्रि के वर्तमान रूप श्रृंगार बिगाड़ने वाला है यानि तारागण जिससे रात्रि की शोभा होती है। सूर्योदय पर सब छिप जाते हैं। इसलिए यह स्त्री पुरूष अलंकार बांधा है कि जैसे स्त्री पुरुष मिलकर रहते हैं, चन्द्रमा का नाम गौतम है, इसलिए है कि यह अत्यन्त वेग से चलता है और रात्रि को अहिल्या इसलिए कहते हैं कि इसमें दिन लय हो जाता है। अर्थात् सूर्य रात्रि को निवृत कर देता है इसलिए वह उसका पति कहलाता है। इस उत्तम रूपक अलंकार को अल्प बुद्धि पुरुषों ने बिगाड़ कर पूर्वजों पर कितने कलंक लगाये। जिससे ईसाई, मुसलमान प्रचारक लाभ उठाकर लाखों करोड़ों हिन्दुओं को ईसाई और मुसलमान बनाने में सफल हुए और रामचन्द्र के अहिल्या रूपी पत्थर पर पांव रखने से उसका उड़ जाना, इस रूपक का स्पष्ट रूप से समर्थन करता है। क्योंकि जब रामचन्द्र जी अयोध्या से निकल कर नदी पार करने को नदी पर पहुंचे तो उस समय दिन निकल आया था और रात्रि उड़ गई। यानि नदी किनारे रामचन्द्र के पांव पड़ने से रात्रि समाप्त हो गई यानि अहिल्या जिसमें दिन लय होता है उसको अहिल्या यानि रात्रि कहते हैं।

इस तरह महर्षि जी स्वयं भी निष्कलंक थे और अपने सब पूर्वजों को भी निष्कलंक कर गये। जितनी भी पुराणों में ऊटपटांग कथायें आती हैं। जिससे हमारे किसी भी ऋषि मुनि महात्मा पर कोई कलंक का आरोप होता है। इन सब को महर्षि जी ने अलंकारक कथाएं सिद्ध करके सब कलंक एक ही असूल बनाकर एकदम धो डाले हैं।

पंडित नीलकंठ शास्त्री जी ईसाईयों के प्रश्न का उत्तर न दे सकने के कारण ईसाई हो गए और उन्होंने अंजील का संस्कृत में भाष्य भी किया। महर्षि जी को मिले और उनके व्याख्यान सुन कर एक दिन महर्षि जी से बोले कि अगर आप जैसा गुरु हम को पहले मिल जाता तो हम कदाचित ईसाई न होते। महर्षि जी ने कहा कि अब क्या बिगड़ा है, वापस आ जाओ। तब नीलकंठ कहने लगा कि महाराज अब तो पानी सिर से गुजर चुका है लड़के लड़कियां सब ईसाईयों के घर विवाहे गये हैं और ईसाईयों की तरफ से सब को काफी तनख्वाहें मिल रही हैं अब वापिस आना कठिन है।

योगियों की तलाश करते हुए वनों और पर्वतों में फिरते समय कई बार जंगली हिंसक पशुओं की ओर से घायल हुए परन्तु संसार को सन्मार्ग दिखाते हुए नगरों में प्रचार के समय जो वार नर पशुओं ने किए उनको पढ़ कर देख लीजिए। सन् 1868 गाजीघाट में महर्षि जी निवास करते थे, तो एक दिन एक ठाकुर और उसके तीन साथी जिनमें से दो के हाथ में तलवार और दो के हाथ में लाठियां थीं। महाराज के निवास स्थान पर आकर गुण्डापन दिखाने लगे। महर्षि के मना करने पर भी जब वह बाज न आये तो महर्षि के शिष्य बलदेव भक्त ने जो पहलवानी के सब दांवपेच जानता था इन चारों को वहां से भगा दिया।

(2) अम्बागढ़ में महर्षि के मूर्तिपूजा के खण्डन से रूष्ट होकर कुछ दुष्टों ने सलाह की कि रात को सोते समय दयानन्द को पकड़ कर गंगा में डुबो दें। जहां स्वामी जी सोया करते थे इनके समीप एक और साधु भी सो रहा था। गुण्डों ने इसे दयानन्द समझ कर दरिया में फैंक दिया। जब वह चिल्लाया कि मुझे बचाओ तब गुण्डों को ज्ञात हुआ कि उन्होंने दयानन्द की जगह किसी और साधु को फेंक दिया है।

(3) सन् 1868 में करणवास में राव करण सिंह ने स्वामी जी के खण्डन से चिढ़कर म्यान से तलवार निकाल कर उन पर वार करना चाहा परन्तु महाराज ने उनसे तलवार छीन कर जमीन पर दबा कर दो टुकड़े कर दिए।

(4) कानपुर में कुछ गुण्डें लाठियां और ढोले लेकर स्वामी जी को मारने के लिए आये। ढेले मारने लगे एक ने लाठी से प्रहार किया, परन्तु महाराज ने लाठी उसके हाथ से छीन ली और उसको गंगा में धकेल दिया।

उदयपुर में दशहरा के मौके पर सैंकड़ों बकरे और भैंसे मारे जाते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस हिंसा कार्य को देखकर बहुत दुःखी हुए। एक दिन जब महाराणा उदयसिंह दशहरा के उत्सव से लोट कर श्रीसेवा में हाजिर हुए तो स्वामी जी महाराज ने हंसी का भाव धारण करते हुए कहा कि आप राजा हैं न्यायाधीश हैं। मैं भैंसों और बकरों का वकील बन कर एक मुकद्दमा आपके सामने रखता हूं कि बेजुबानों को मारना अन्याय है और इससे पाप के सिवाय और कोई लाभ नहीं है। महाराणा जी ने स्वामी जी की बात मान ली, परन्तु यह कहा कि पशु हत्या बन्द कर देने से एकदम कोलाहल मच जायेगा। इसे धीरे-धीरे ही बन्द करना होगा और इस पर महाराणा साहब ने किसी हद तक पशु हत्या बन्द कर देने की आज्ञा भी दे दी थी।

अनूप शहर निवास के समय एक ब्राह्मण ने स्वामी जी के मूर्तिपूजा के खण्डन से रुष्ट होकर पान में विष दे दिया था परन्तु महाराज ने न्यौली कर्म करके इस विष को अपने शरीर से निकाल दिया था। अनूप शहर का मुसलमान तहसीलदार सैयद मुहम्मद स्वामी जी का बड़ा भक्त बन गया था। जब सैयद मुहम्मद को इस घटना का पता लगा तो वह उस ब्राह्मण को पकड़ कर स्वामी जी के पास ले गया और मन में विचारने लगा कि स्वामी जी अपने कातिल को पकड़ कर लाने के कारण मुझ पर प्रसन्न होंगे परन्तु जब वह उनके सामने आया तो महर्षि जी ने इससे बोलना बन्द कर दिया। जब सैयद मुहम्मद ने इस अप्रसन्नता का कारण पूछा तो महाराज ने कहा मैं दुनिया को कैद कराने नहीं आया बल्कि कैद से छुड़ाने आया हूं। अगर दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता तो मैं सन्यासी होकर श्रेष्ठता क्यों छोड़ू।

महर्षि दयानन्द जी केवल दुनिया को कैद से नहीं अपितु दिमागी गुलामी से भी संसार को छुड़ाने आये थे। उन्होंने कभी यह नहीं कहा था कि आप लोग मेरी बात को अवश्य मानें अपितु यह कहते थे मेरी विचारधारा सुनो फिर सोचो और सोच समझ कर काम करो।

स्वामी दयानन्द और उनका उद्देश्य

ले० स्व० श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

प्रियवर पाठक! आप महाशयों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम तो अवश्य सुना होगा उनके निर्माण किये हुए वेद भाष्य व अन्यान्य पुस्तकों को भी कदाचित देखने का अवसर मिला होगा यदि आप आर्य समाज के सदस्य हैं तो आप को उनकी व्यवस्था से भली प्रकार अभिज्ञता होगी परन्तु इतने पर भी क्या आपने श्री स्वामी जी के मुख्य उद्देश्य या सदुपदेशों का प्रयोजन यथोचित समझ लिया है। मुझे जहां तक इसमें 26 वर्ष सामाजिक आयु को व्यतीत कर अनुभव से ज्ञात हुआ है और उसमें सफलता हुई है। मैं कह सकता हूं कि मुझे अति न्यून संख्या ऐसे मनुष्यों की दृष्टिगोचर होती है जो उस महर्षि के मन्तव्यों को भली भांति समझे हों बहुत से लोग स्वामी जी को भारत वर्ष का हितैषी मानते हैं कुछेक उनको हिन्दू रिफार्मर ठहराते हैं। अनेक महाशय उनको देशोद्धारक मानते हैं परन्तु मेरी सम्मत्ति से एक महात्मा सन्यासी के विषय में ऐसा कहना मानो उसको उसके धर्म से पदच्युत कर देना है क्योंकि सन्यासी का धर्म सारे संसार का उपकार करना और प्रत्येक को समान दृष्टि से देखना है यदि स्वामी दयानन्द केवल भारत वर्ष के हितैषी थे तो अन्य देशों के वे अवश्य अशुभ चिंतक होंगे जो सर्वथा मिथ्या है यदि हिन्दू रिफार्मर थे तो हिन्दू जाति से प्रीति और अन्य से घृणा होगी परन्तु यह प्रत्यक्ष रूप से अल्प बुद्धिजनों के मन्तव्य हो सकते हैं। वास्तव में वह महर्षि एक सच्चा सन्यासी था और सारे संसार के प्राणी मात्र को सुख पहुंचाना उसका उद्देश्य था।

प्यारे मित्रो! यह आपको ज्ञात है कि आदि में सारे संसार में वैदिक धर्म का प्रचार था परन्तु क्रमशः समय के प्रवाह ने वैदिक धर्म को भिन्न-भिन्न टुकड़ों में विभाजित कर दिया इसका प्रमाण यह है कि वैदिक धर्म का सर्वोत्तम नियम अर्थात् यज्ञ अग्निहोत्र को हम प्रत्येक देश तथा धर्म की मूल पुस्तक में पाते हैं और पांच सहस्त्र वर्ष से प्रथम का कोई ऐसा सम्प्रदाय प्रतीत नहीं होता- अर्थात् यवन मत 1300 वर्ष से, ईसाई मत 1900 वर्ष से, यहूदी 3500 वर्ष से, पारसी मत 4500 वर्ष से, इससे प्रथम वैदिक धर्म के अतिरिक्त कोई मत नहीं पाया जाता जिस से प्रत्यक्ष विदित है कि यह सारे मत वैदिक धर्म के बिगड़ने से उत्पन्न हो गए-इसके अतिरिक्त जिस समय चरक में इस श्लोक को देखते हैं,

वाल्हिका पल्लवाश्चीनाः शुलीका यवनाशका
माषगोधूम मरमहदीशास्त्रवैश्वानरोचिता।।

अर्थात् महात्मा अत्रि ऋषि ने वलख, ईरान, चीन, अरब, यूनान और उसके पूर्वी विभागों में भ्रमण किया और वहां पर उन्होंने अंगूर उर्द और गेहूं के खाने वाले तथा शास्त्र के अनुकूल अग्निहोत्र करने हारे मनुष्य देखे तो इससे प्रत्यक्ष ज्ञात होता है कि वैदिक धर्म उस समय वर्तमान था और जब महाभारत युद्ध में योग्य विद्वानों के नष्ट हो जाने से उस का प्रचार निर्बल हो गया और अन्त में प्रचार के न रहने से और धनादि की अधिकता से मनुष्यों में दुराचार फैलने लगा और राजा लोग निन्दित कर्मों में प्रवृत्त हो गए ब्राह्मण जो उस समय जगतगुरु कहलाते थे वैदिक धर्म के प्रचार के न होने तथा आलस्य से अपने कर्त्तव्यों से प्रथम ही पतित हो चुके थे वे भी राजाओं के सेवक हो गए हां में हां मिलाने लगे-इसी प्रकार जब सारे देश में उनकी निन्दा होने लगी उस समय जब लोगों ने राजाओं से कहा कि आप यह क्या अधर्म करते हैं? तब राजाओं ने अपने पुरोहित ब्राह्मणों से मिल कर इस निन्दा से बचने का उपाय किया और संसार में एक ऐसा मत चलाया जिस में सारे कुमार्ग धर्म बन गए-इस मत का नाम वाम मार्ग है-और ''वाम'' का अर्थः ''उलटा'' अर्थात् उल्टा मार्ग फैलाया जिसमें अधर्म की बातों को धर्म बतलाया अर्थात् ईश्वर के स्थान पर प्रकृति को मानना या विषय सुख को धर्म बतलाना प्रत्यक्ष रूप से वाम मार्ग का उल्टा मार्ग बतला रहे हैं।

भ्रातृगण! इस वाम मार्ग का मूल तैतरीय-शाखा है क्योंकि उसके विषय में जो वृत्तांत महीधर भाष्य में लिखा है उससे प्रत्यक्ष विदित होता है कि उसी समय से वाम मार्ग चला अर्थात् एक समय व्यास जी के चेले वैशम्पायन अपने शिष्य याज्ञवल्क्य से किसी बात पर रुष्ट हो गए और उससे कहा मेरी पढ़ी हुई विद्या को छोड़ दे-याज्ञवल्क्य ने अपने और शिष्यों से कहा कि इसको खा लो-उन्होंने तीतर का रूप धारण कर उसको खा लिया अतएव यह तैतरीय-शाखा बन गई यह वृत्तांत महीधर ने यजुर्वेद भाष्य की भूमिका में लिखा है। इस लेख से तैतरीय शाखा की उत्पत्ति ज्ञात

हो गई और याज्ञवल्क्य ऋषि के समय का पता लग गया।

पाठकवृन्द! यह गाथा वाममार्ग के प्रारम्भ की है अन्यथा वाममार्गियों में तो बड़ा सिद्ध वही कहलाता है जो वमन को भक्षण कर ले और इस गाथा में तीतर बनना इस बात को सिद्ध करता है कि उस समय वाममार्ग का विशेष प्रचार नहीं हुआ था और न इस प्रकार से सिद्ध उत्पन्न हुए थे-और जितने सूत्र आजकल दृष्टिगत होते हैं जिन में पशुयज्ञ और मांसादि का विधान है उनमें अधिकतर तैतरीय शाखा तैतरीयआरण्यक और तैतरीय ब्राह्मण के दिये जाते हैं जो वाममार्ग के समय में निर्मित हुए हैं और इन्हीं पुस्तकों में पशु हिंसा बतलाई है। अन्यथा पूर्वकाल में तो यज्ञ में हिंसा करना महापाप है जैसा कि ऋग्वेद के मंत्र में लिखा है।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वत: परि भूरसि सइद्देवेषु गच्छति।

अर्थात् हे ज्ञानस्वरूप अग्निनाम परमात्मन तेरा जो हिंसा रहित यज्ञ सारे संसार में व्याप्त हो रहा है वही इस स्थान से देवताओं को जाता है।

बहुत महाशयों को इसमें शंका होगी परन्तु वेद में कम से कम सौ जगह यज्ञ को हिंसा रहित बतलाया है और इस मन्तव्य की पुष्टि में अनेक उदाहरण पाए जाते हैं अर्थात् जिस समय विश्वामित्र ने यज्ञ किया था उस समय राक्षस लोग उनके यज्ञ में मांस विष्टादि डालकर उसको अपवित्र करते थे यदि यज्ञ में हिंसा का निषेध न होता तो विश्वामित्र क्षत्रिय होने पर भी कभी राजा रामचन्द्र जी को सहायतार्थ न बुलाते क्योंकि यज्ञ में क्रोध करना पाप है और हिंसा बिना क्रोध के हो नहीं सकती-इसमें और भी प्रमाण है।

प्रियपाठक! इसका बहुत बड़ा प्रमाण यह है कि पारसियों को जब अग्निहोत्र का उपदेश हुआ था अर्थात् जिस समय व्यास व जरदुश्त का वार्तालाप हुआ था और व्यास जी ने अग्निहोत्र का उपदेश किया उस समय तो केवल सुगन्धित बल वधंक और आरोग्य रखने वाले पदार्थों का हवन होता था जैसा कि पारसियों के रिवाज से प्रकट होता है-परन्तु वाममार्ग फैल जाने के पश्चात् जो आर्यावर्त्त से अन्य देशों में शिक्षा पहुंची वहां यज्ञ के स्थान में पशुवध का प्रचार हो गया-जिस समय इस प्रकार चारों ओर वेदों के अर्थों का अनर्थ करके वेद के नाम से बहुत सी वाममार्गीय पुस्तकें और सूत्र बनाये तो सारे संसार में वेदों की निंदा होने लगी जैसा कि चारवाक ने लिखा है।

त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भांडधूर्तनिशाचरा:।।

अर्थात् वेदों के बनाने वाले भांड़ धूर्त और राक्षस तीन हैं। जब इस तरह से वेदों की निन्दा होती थी तो एक राजा की लड़की जिसको वैदिक धर्म में अति प्रीति थी शोक से यह कह रही थीं।।

किंकरोमि क्वगच्छामि को वेदानुद्धरिष्यति।।

अर्थात् क्या करूं कहां जाऊं कौन वेदों का उद्धार करेगा उसकी इस बात को सुनकर कुमारिल भट्टाचार्य को इस बात का विचार उत्पन्न हुआ और उत्तर दिया।

मा चिभय वरारोहे भट्टाचार्योस्ति भूतले।।

अर्थात् ऐ धर्मानुरागिणी! कुछ चिंता मत कर वेदों के उद्धार के लिए भट्टाचार्य मौजूद है और कुमारिल भट्टाचार्य ने मीमांसा वार्तिक बना कर यज्ञों का नियम ठीक करने का प्रयत्न किया परन्तु वह पूरे तौर से कृत कार्य न हुए।

जब इस प्रकार वाम मार्ग के अधिक प्रचार ने देश में दुराचार फैला रखा था उसी समय कपिल वस्तु के राजा साखी सिंह गौतम को उसके दूर करने के हेतु बहुत भारी विचार पैदा हुआ, उन्होंने राज्य को छोड़ तप करना आरम्भ किया जब अच्छी तरह ज्ञान हो गया तो उन्होंने हिंसक यज्ञों का खण्डन करना आरम्भ किया और उस समय जब वाम मार्गी ब्राह्मण सब जातियों को सेवक बना कर अधर्म में चला रहे थे उनके वर्णाश्रम का भी खण्डन आरम्भ किया, बुद्ध की शिक्षा अधिकतर वैदिक धर्मानुकूल थी परन्तु उस समय जो वाममार्ग के अनर्थों से वैदिक धर्म का लोप हो रहा था उससे बिल्कुल विरुद्ध थी-उस समय वाम वार्मी ब्राह्मणों ने बौद्धमत के शास्त्रार्थ में वेदों के प्रमाण अर्थात् उसी वाम मार्गी तैतरीय शाखा के प्रमाण देने आरम्भ किये महात्मा बुद्ध देव जो कि संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् तो थे ही नहीं इस कारण स्वयं तो पदार्थ विचार न कर सकते थे दूसरे उस समय में वेदों के अनुकूल पुस्तकें भी कम प्राप्त होती थीं जिस से उन को भली भांति शिक्षा होती।

जब उन्होंने देखा कि वेदों के जमघटे को साथ लेकर वाम मार्ग को दूर नहीं कर सकते और संसार का उपकार नहीं कर सकते हैं तो उसका उपाय उनको यही सूझा कि वेद को मानना छोड़ दें और जहां तक हो सके इन हिंसा करने वाले यज्ञों को बंद करने के वास्ते अनेक प्रकार और उनकी जड़ वेदों के न्यून करने का प्रयत्न किया अतएव उन्होंने शूद्रों से कार्य आरम्भ किया और थोड़े ही दिनों में सारे भारतवर्ष में हलचल मच गया जब विरोधियों ने देखा कि गौतम वेदों को नहीं मानता तो उन्होंने उससे कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं।

बुद्धदेव ने उत्तर दिया कि हम ऐसे ईश्वर को भी नहीं मानते जिस ने ऐसी पुस्तकें बनाई हों जिसमें हिंसा करने का उपदेश हो अस्तु इस प्रकार महात्मा बुद्धदेव धर्म के एक हिस्से को अपने मन्तव्यानुसार विषयुक्त समझ कर उस से पृथक हो गए और शेष भाग का प्रचार करने लगे जब इस प्रकार से ज्ञान का मुख्य भाग

अर्थात् जीव, प्रकृति, ईश्वर इन तीन में से ईश्वर निकल गया और शेष दो तिहाई धर्म अर्थात् जीव और प्रकृति का प्रचार होता रहा।

प्यारे मित्रो! इस त्रुटि को पूरा करने के वास्ते स्वामी शंकराचार्य जी महाराज ब्रह्म की सिद्धि के वास्ते कटिबद्ध हुए और सारे देश में भ्रमण कर बौद्ध मत का खण्डन किया और जहां तक हो सका अपना कुल समय ब्रह्म सिद्धि में व्यय किया-क्योंकि उस समय तक मनुष्यों में प्रकृति और जीव को छोड़ कर दूसरे किसी स्थान में दिखलाना कठिन था इसलिये उन्होंने प्रत्येक वस्तु को दिखलाना शुरू किया और षट पदार्थ अनादि बताकर पांच को सान्त बतलाया अभी महात्मा शंकराचार्य को अपना पूरा सिद्धान्त दिखलाने का अवसर मिला ही नहीं था देश के दुर्भाग्य से वह भारत का भानु इस असार संसार से चलता हुआ परन्तु जितना काम इस महात्मा ने किया उससे मालूम होता है कि यदि इस ऋषि को दस वर्ष तक अधिक जीवित रहने का अवसर मिलता तो यह भारत का उद्धार कर देते और वैदिक धर्म को जो महाभारत के बाद हानि पहुंची थी उसकी पूर्ति हो जाती परन्तु तो भी 22 वर्ष की अवस्था से 32 वर्ष की अवस्था तक इस ब्रह्म प्रचारक के सामान्यतया और आर्यावर्त्त में विशेषतया ब्रह्म को फैला दिया।

भ्रातृ वर्गो। महात्मा शंकराचार्य के पश्चात् उनके चेले यद्यपि बड़े-बड़े पण्डित हुए जिन्होंने अद्वैत वाद को सिद्ध करने के लिए सहस्त्रों नए प्रमाण गढ़े और सैंकड़ों पुस्तकें लिख डालीं परन्तु यह वैदिक धर्म को उस मूल तत्व से बहुत दूर ले गये अर्थात् उन्होंने प्रकृति और जीव के अस्तित्व से बिल्कुल इन्कार कर दिया और षट अनादि मान कर पांच को अन्त वाला बतलाने के मन्तव्य को बिलकुल न समझा-महात्मा शंकराचार्य का तो यह सिद्धान्त था कि जो वस्तु उत्पन्न होती है वह अनित्य है और जो उत्पत्ति से रहित है वह नित्य है।

अतएव यह छः पदार्थ अनादि अर्थात् उत्पत्ति शून्य हैं अतएव नित्य हैं परन्तु ब्रह्म तो सर्वव्यापक है अर्थात् वह अनन्त है और शेष पांच पदार्थ जीव, ईश्वर, माया, अविद्या और इनका सम्बन्ध यह पांचों सीमाबद्ध हैं यहां पर जीव के अर्थ बद्ध जीव के हैं और ईश्वर मुक्त जीव को कहते हैं अविद्या जीव का गुण है, माया प्रकृति का नाम है।

हमारे कुछेक मित्र यह कहेंगे कि तुम ने यह बात मन गढ़न्त कही है परन्तु जहां जीव का लक्षण किया है वहां अविद्या में युक्त चेतन को जीव माना है अविद्या के दो अर्थ हो सकते हैं एक तो ज्ञान का अभाव दूसरे विपरीत ज्ञान अगर अविद्या के अर्थ ज्ञान के अभाव के मानें तो ठीक नहीं क्योंकि 'चेतन' ज्ञान वाले को कहते हैं और जिस में ज्ञान का अभाव है वह चेतन ही नहीं कहला सकता इस हेतु से अविद्या का विपरीत ज्ञान के लिये जाते हैं यहां उलटा ज्ञान बन्धन अर्थात् दु:खोत्पत्ति का कारण है और इसी के नाश से मुक्ति होती है जब मिथ्याज्ञान का नाश हो गया तो उसमें अल्पज्ञता जो जीव का स्वाभाविक गुण है मौजूद है परन्तु मिथ्याज्ञान बिल्कुल अलग हो गया अब यह बन्धन से खाली है इसी को शुद्ध सत्य प्रधान उपाधि सहित अर्थात् ईश्वर कहते हैं।

प्रिय पाठक! क्योंकि आदि और अन्त दो प्रकार से होते हैं एक तो देश योग से दूसरा काल योग से जो वस्तु काल योग से अनादि वाली है वह काल से अन्त वाली होगी क्योंकि नदी एक किनारे की कहीं होती ही नहीं जिस का आदि है उसका अन्त अवश्य है और जो वस्तु देश योग से अनन्त भी होगी परन्तु यह नहीं हो सकता कि जो वस्तु काल योग से अनादि हैं परन्तु देश योग से सान्त हैं यहां महात्मा शंकराचार्य का यह प्रयोजन था कि काल योग से छः वस्तुएं अनादि और अन्त वाली केवल एक ब्रह्म ही अनन्त है।

सज्जन महाशयो! महात्मा शंकराचार्य के प्रयोजन को न समझ कर लोगों ने ऐसे झगड़े उत्पन्न किये कि महात्मा शंकर का जो सिद्धान्त वैदिक धर्म की उस कमी को पूरा करने का था जो महात्मा बुद्ध ने संस्कृत न जानने और पण्डितों के वाम मार्गी होने के कारण अयुक्त समझ काट दिया था परन्तु दुर्भाग्य वश शंकराचार्य के चेलों के बिना समझे या किसी अपने प्रयोजन से वैदिक धर्म के उस हिस्से को जिस को बुद्ध ने स्थिर रखा था बिलकुल उड़ा दिया केवल वह भाग जिसको शंकराचार्य बौद्ध मत में मिला कर उसकी त्रुटि को पूरा करना चाहते थे उसी को रख लिया अर्थात् जीव प्रकृति जिसको बौद्धमत वाले मानते थे शंकराचार्य इसमें ब्रह्म को मिला कर इसको पूरा वैदिक धर्म बनाना चाहते थे परन्तु उनके चेलों ने प्रकृति और जीव को उड़ा कर केवल ब्रह्म तथा एक तिहाई वैदिक धर्म का प्रचार शुरू किया और शेष पर विशेष ध्यान न दिया अब वैदिक धर्म के दो भाग हो गए एक बौद्धमत दूसरा अद्वैत वाद दो तिहाई भाग तो बौद्धमत ने ले लिया और एक भाग शंकराचार्य के चेलों अर्थात् अद्वैत वादियों ने लिया परन्तु यह तिहाई भाग विशेषत: प्रकाशक और हितकारी था इस वास्ते यह प्रबल पड़ा और पृथ्वी के प्रत्येक विभाग में फैल गया।

ऋषि निर्वाण

लेo-श्री आचार्य विष्णुमित्र आर्य नजीबाबाद जनपद-बिजनौर (उoप्रo)

नवसस्येष्टियज्ञों व सुगन्धित दीपमालाओं द्वारा सर्वत्र आमोद-प्रमोद की वर्षा करते हुए दीपावली पर्व का उत्सव कार्तिक अमावस्या के दिन प्राचीन काल से नियत है। इस महत्वपूर्ण पर्व को महर्षि दयानन्द के निर्वाण की असाधारण घटना ने और भी गौरवान्वित किया है। कार्तिक अमावस्या सम्वत् 1940 को वह सायं छः बजे का समय भी कैसा निर्मम था जिसने विश्व की महान् विभूति आर्यजनों के प्राणभूत महर्षि को सर्वदा के लिए छीन लिया। तथापि महापुरुषों का देहावसान साधारण व्यक्तियों की भांति शोकोत्पादक न होकर प्रेरणादायक होता है। वे परोपकार के लिए अपने शरीर के उत्सर्ग द्वारा उत्तम आदर्शों की स्थापना करके संयोजन करते हैं। कृतज्ञ जन उन के चरित्र के गुणानुवाद से प्रेरणा लेकर आनन्दानुभव करते हैं। महर्षि दयानन्द के बलिदान की गाथा आस्तिकता व अहिंसा का पावन उद्घोष है। तनिक इस अभूतपूर्व निर्वाण पर दृष्टिपात कीजिए-स्वामी जी महाराज जोधपुर नरेश महाराजा यशवन्त सिंह के निमन्त्रण पर जोधपुर पर्दापण करते हैं। वहां नीर-क्षीर का विवेक कराने वाले उनके व्याख्यानों में सदा की भांति न्याय होता था, नीति होती थी, युक्तियां थी, प्रमाणों से सुसज्जित सर्वोपरि सत्य का प्रकाश होता था। उनके उपदेशवारिवर्षण में स्नान करके सारे भ्रम दूर होकर श्रद्धालुओं के अन्तःकरण निर्मल हो जाते थे।

वेदामृत का आनन्द लेने के लिए जोधपुराधीश महाराजा यशवन्त सिंह जी भी स्वामी जी के दर्शनार्थ तीन बार उनके आसन पर आये तथा तीन बार ही श्रीचरणों को अपने आवास पर निमन्त्रित किया। एक दिवस जब जोधपुराधीश के निवास पर दर्शन देने गये तब नन्हीं जान नाम की वारांगना को वहां से पालकी द्वारा विदा होते देख लिया, वारांगना तो वहां से चली गई परन्तु इस दृश्य को देख कर राष्ट्रहितैषी देवदयानन्द का हृदय द्रवित हो उठा। वे महाराजा को इस पापपङ्क से मुक्त करने के लिए देशहितैषिता की भावना से कहने लगे राजन्! राजा लोग तो सिंह समान समझे जाते हैं उनका कुक्करी सदृश वेश्या में सक्त हो जाना सर्वथा अनुचित है। दुर्व्यसन के कारण धर्म-कर्म भ्रष्ट होकर पुरुष का अधःपतन स्वतः हो जाता है। आप पर देश का भार है इस दुर्व्यसन को तिलाञ्जलि देनी चाहिए।

भगवान् दयानन्द के उपदेशामृत से जहां सत्य-प्रिय शुद्ध भावभावित जन अमरपथ के पथिक बनकर शान्ति का अनुभव कर रहे थे वहीं संस्कार विहीन दुराग्रही व्यक्ति द्वेषाग्नि में जल रहे थे। उस देवता के मानस महत्व को विषयानन्द के रसिक मर्त्यलोक के साधारण जीव क्या समझते।

वेश्या व्यंसन के विरुद्ध महाराज को किये उपदेश से खिन्नमना नन्हीं जान विकट वैर की विषम ज्वाला से अहर्निश सन्तप्त रहने लगी। वह स्वामी जी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने में लग गई, उसके साथ वे सब भी क्रियात्मक सहानुभूति में उद्यत हो गए जो अपने-अपने स्वार्थवश स्वामी जी के सत्य वचनों का स्पर्श न कर पाने के कारण मतभेद रखने लगे थे। परन्तु जब तक अपने ही भेदी न हों तब तक कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अपने ही दीपक से भवन भस्म होते हैं। ऐसे हीन नराधम ऋषिवर के पास भी रहते थे। आश्विन कृष्ण चतुर्दशी सम्वत् 1940 को ऋषिवर दुग्धपान करके सो गए। नहीं-नहीं आज दुग्धपान कहां किया था, आज तो वस्तुतः षड्यन्त्र-कारियों ने पतित जगन्नाथ के द्वारा अनीति, अन्याय और नीचता से दुग्ध के साथ हलाहल विषम विष का प्रयोग कराकर सबके लिए दुखद घृणित अनर्थ करा दिया। आः!!!

आश्चर्य है विश्वासपात्र जगन्नाथ ही ब्रह्मघाती बन गया।

ऋषिवर अपराधी जगन्नाथ को जान गये। वह अपने अधतम अपराध को स्वीकार करते हुए प्रायश्चित की ज्वाला में जलने लगा। अपराधी को प्रायश्चित करते देखकर कर्मगति और फलभोग के विश्वासी दयानन्द अपने प्राणघातक के प्राणों की रक्षा का उपाय चिन्तन करने लगे। वे बोले जगन्नाथ! मेरे इस समय मरने से कार्य अपूर्ण रह गया है, तुम नहीं जानते इससे लोकहित को कितनी बाधा पहुंची है। इतना कह कर क्षमाशील दयालु दयानन्द अपने घातक को प्रेम सहित प्राण रक्षा के उपाय में प्रवृत करते हुए बोले जगन्नाथ! लो ये कुछ रुपये हैं इन्हें लेकर इस राज्य की सीमा से पृथक् नेपाल जा कर अपने प्राणों की रक्षा करो। किसी को भी अपने इस जघन्य कर्म का पता न होने देना। इस प्रकार इस अहिंसा-व्रती ने मारने वाले को भी जीवनदान देकर संसार के इतिहास में अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

भयंकर विष के प्रभाव से स्वामी जी महाराज की स्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ती चली गई। परन्तु दु:ख व आश्चर्य तो डा० अलीमर्दान खां पर होता है जिन की औषधि निरन्तर विष का कार्य कर रही थी। रोगाग्नि पर औषधी तैल बन कर क्यों प्रकट होती थी इस रहस्य को परमपिता परमात्मा ही भली भांति जानते हैं। स्वामी जी जोधपुर से आबू पहुंचे। वहां भी चिकित्सा अनुकूल न देख भक्तों के आग्रह पर अजमेर प्रस्थान करते हैं। परन्तु विष का प्रभाव सारे शरीर से व्याप्त हो गया फलत: रोग ने उग्र रूप धारण कर लिया। अन्तर्दाह व शरीर पर छाले बढ़ते गए। इस विकट विपत में भी स्वामी जी धैर्यपूर्वक भक्तों की खिन्नता दूर करते रहते थे। दीपावली के दो दिन पूर्व लाहौर से पं० गुरूदत्त विद्यार्थी व जीवन दास जी भी स्वामी जी के दर्शनार्थ अजमेर पहुंच गये।

आश्चर्यजनक अन्तिम दृश्य का समय दीपावली का दिवस भी आ पहुंचा। स्वामी जी के तन को यद्यपि विषजन्य भयंकर व्याधि ने सत्वहीन कर दिया था तथापि वे प्रसन्नचित्त थे और अपने पवित्र प्रेम के सुपात्र भक्तों को कर्त्तव्य कर्म का पालन करने व आनन्दपूर्वक रहने का उपदेश करते रहे। ऐसी दशा में ही साढ़े पांच बज गये। स्वामी जी दैवेच्छा को भली भांति समझ चुके थे। इसलिए परमात्मा की व्यवस्था को सानन्द स्वीकार करके उसमें अपनी सहमति को भी सांझा करते हुए महाप्रयाण के लिए सन्नद्ध होकर भवन के सभी द्वार व वातायन खुलवा दिये और समागत भक्तों को अपनी पीठ के पीछे खड़ा कर दिया। फिर पूछा आज कौन सा पक्ष, तिथि व वार है, भक्त मोहन लाल ने कहा कि भगवन्! कार्तिक मास की अमावस्या व मंगलवार है। यह सुनकर अपनी दिव्यदृष्टि से भवन के चहुं ओर दृष्टिपात किया और गम्भीर ध्वनि से वेदपाठ प्रारम्भ हो गया, मानो दयानन्द के आत्मा व परमात्मा की अन्तरंग परिषद् प्रारम्भ हो गई। ऋषिभक्त गुरुदत्त उस कमरे के एक कोने में भित्ति के साथ लगे हुए निर्निमेष नेत्रों से दो सखाओं (ऋषि दयानन्द व परमात्मा) के अनिर्वचनीय मिलन का अवलोकन कर रहे थे। प्रभु मग्न दयानन्द ने वेदगान के अनन्तर परमप्रीति से पुलकित होकर संस्कृत शब्दों में परमात्मदेव का गुणगान किया। तत्पश्चात् हिन्दी में स्तुति करते आनन्दमग्न होकर गायत्री मन्त्र का पाठ करते-करते शान्त समाधिस्थ हो गये। कुछ काल पश्चात् समाधि की उच्चतम भूमि से उतर कर परमप्रिय पिता से आह्लादक वार्तालाप में निमग्न हो कर अतीत मैत्रीभाव से कहते हैं हे दयामय सर्व शक्तिमान् ईश्वर। तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा!!! तूने अच्छी लीला की। इतना कह कर करवट ली और एक बार श्वास को रोककर पुन: सदा के लिए बाहर निकाल मोक्षानन्द को प्राप्त हो गए।

आ!!! इधर सरस्वती का अक्षीण कोष विलुप्त हो गया, सुधारक समाज का अवलम्ब निरवलम्ब हो गया, श्रुतिपथ का उद्धारक अस्त हो गया, वेद सुधा द्वारा समस्त रूढ़ियों का निवारक सदवैद्य लुप्त हो गया और उधर ऋषिवर अपने अवर्णनीय ईश मिलन से नास्तिक शिरोमणि गुरुदत्त को जीवन दे गये। गुरुदत्त ने एक ईश्वरभक्त योगी को मृत्यु पर विजय प्राप्त करते देखा वे चिन्तन करने लगे कि इतनी असह्य वेदना व अन्तर्दाह के होते हुए आनन्द में अतिशय निमग्न होकर दयानन्द का आत्मा जिससे प्रेमालाप करते हुए उसकी इच्छा व लीला को प्रत्यक्ष कर रहा था और जो दिव्यशक्ति दयानन्द का आह्वान कर रही थी उस (ईश्वर) का अस्तित्व अवश्य है।

इस दयानन्द निर्वाण रूप सुन्दरतम दैवी दृश्य से नास्तिकता के समस्त तर्क विलुप्त हो गये, गुरुदत्त आस्तिक शिरोमणि बन कर सच्चा जीवन पा गये और सारे जग को अहिंसा व आस्तिकता आदि पावन गुणों का प्रेरक अध्याय मिल गया।

महर्षि दयानन्द का काशी शास्त्रार्थ

महर्षि दयानन्द के काशी शास्त्रार्थ का प्रसंग पाठकों के लाभार्थ यहां प्रस्तुत किया जा रहा है क्योंकि इसी वर्ष काशी शास्त्रार्थ के 150 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं, जिसके उपलक्ष्य में सार्वदेशिक सभा के द्वारा 11,12,13 अक्तूबर 2019 को काशी में महासम्मेलन का आयोजन किया था।

सम्पादक आर्य मर्यादा

एक दयानन्द सरस्वती नामक सन्यासी दिगम्बर गंगा के तीर विचरते रहते हैं जो सत्यपुरुष और सत्य शास्त्रों के वेत्ता हैं। उन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेदादि का विचार किया है सो ऐसा सत्यशास्त्रों को देख निश्चय कर के कहते है कि पाषाणादि मूर्ति पूजन शैव शाक्त गाणपत और वैष्णव आदि सम्प्रदायों और रूद्राक्ष तुलसी माला त्रिपुण्डरादि धारण का विधान कहीं भी वेदों में नहीं है इस से यह सब मिथ्या ही है कदापि इन का आचरण न करना चाहिये क्योंकि वेद विरुद्ध और वेदों में अप्रसिद्ध के आचरण से बड़ा पाप होता है ऐसी मर्यादा वेदों में लिखी है।

इस हेतु से उक्त स्वामी जी हरिद्वार से लेकर सर्वत्र इस का खण्डन करते हुये काशी में आ के दुर्गा कुण्ड के समीप आनन्द बाग में स्थित हुये। उन के आने की धूम मची, बहुत से पंडितों ने वेदों के पुस्तकों में विचार करना आरम्भ किया परन्तु पाषाणादि मूर्ति पूजा का विधान कहीं भी किसी को न मिला बहुधा कर के इस के पूजन में आग्रह बहुतों का है।

इस से काशी राज महाराज ने बहुत से पंडितों को बुला कर पूछा कि इस विषय में क्या करना चाहिये तब सब ने ऐसा निश्चय कर के कहा कि किसी प्रकार से दयानन्द सरस्वती स्वामी के साथ शास्त्रार्थ करके बहुकाल से प्रवृत्त आचार को जैसे जैसे स्थापना हो सके करना चाहिये।

निदान कार्तिक सुदी 12 सं० 1926 मंगलवार को महाराज काशी नरेश बहुत से पंडितों को साथ लेकर जब स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने के हेतु आए तब दयानन्द स्वामी जी ने महाराज से पूछा कि आप वेदों की पुस्तक ले आए हैं वा नहीं।

महाराजा ने कहा कि वेद सम्पूर्ण पंडितों को कंठस्थ हैं पुस्तकों का क्या प्रयोजन है तब दयानन्द सरस्वती जी ने कहा कि पुस्तकों के बिना पूर्वापर प्रकरण का विचार ठीक-ठीक नहीं हो सकता भला पुस्तक नहीं लाये तो नहीं सही परन्तु किस विषय पर विचार होगा।

पंडितों ने कहा कि तुम मूर्तिपूजा का खंडन करते हो हम लोग उसका मंडन करेंगे।

पुन: स्वामी जी ने कहा कि जो कोई आप लोगों में मुख्य हो वही एक पंडित मुझ से संवाद करे।

पंडित रघुनाथप्रसाद कोतवाल ने भी यह नियम किया कि स्वामी जी से एक-एक पंडित विचार करे।

पुन: सब से पहले ताराचरण नैयायिक स्वामी जी से विचार के हेतु सम्मुख प्रवृत्त हुए। स्वामी जी ने उन से पूछा कि आप वेदों का प्रमाण मानते हैं वा नहीं, उन्होंने उत्तर दिया कि जो वर्णाश्रम में स्थित हैं उन सब को वेदों का प्रमाण ही है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि कहीं वेदों में पाषाणादि मूर्त्तियों के पूजन का प्रमाण है वा नहीं? यदि हो तो दिखाइये और जो नहीं तो कहिये कि नहीं है।

पंडित ताराचरण ने कहा कि वेदों में प्रमाण है वा नहीं परन्तु जो एक वेदों ही का प्रमाण मानता है औरों का नहीं उसके प्रति क्या कहना चाहिये, इस पर स्वामी जी ने कहा कि औरों का विचार पीछे होगा, वेदों का विचार मुख्य है इस निमित्त से इस का विचार पहले ही करना चाहिये क्योंकि वेदोक्त ही कर्म मुख्य है और मनुस्मृति आदि भी वेदमूलक है इससे इनका भी प्रमाण है क्योंकि जो-जो वेदविरुद्ध और वेदों में अप्रसिद्ध है उनका प्रमाण नहीं होता।

पंडित ताराचरण ने कहा कि मनुस्मृति का वेदों में कहां मूल है?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि जो-जो मनुजी ने कहा हैं सो-सो औषधों का भी औषध है ऐसा सामवेद के ब्राह्मण में कहा है।

विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि रचना की अनुपत्ति होने से अनुमान प्रतिपाद्य प्रधान जगत् का कारण नहीं, व्यास जी के इस सूत्र का वेदों में क्या मूल है, इस पर स्वामी ने कहा कि यह प्रकरण से भिन्न बात है इस पर विचार करना न चाहिये। फिर विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि यदि तुम जानते हो तो अवश्य कहो इस पर स्वामी जी यह समझ कर कि प्रकरणान्तर में वार्त्ता जा रहेगी, कहा जो कदाचित किसी को कण्ठ न हो तो पुस्तक देख कर कहा जा सकता है। तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि जो कण्ठस्थ नहीं है तो काशी नगर में शास्त्रार्थ करने को क्यों उद्यत हुए? इस पर स्वामी जी ने कहा कि क्या आप को सब कण्ठस्थ है?

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि हां हम को कण्ठस्थ है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि कहिये धर्म का क्या स्वरूप है।

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि जो वेदप्रतिपादित फल सहित अर्थ है यही धर्म कहा जाता है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह आप का संस्कृत है इस का क्या प्रमाण, श्रुति स्मृति कहिये।

विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि जो चोदना लक्षण अर्थ है सो धर्म कहलाता है यह जैमिनि का सूत्र है।

स्वामी जी ने कहा कि यह सूत्र है यहां श्रुति वा स्मृति को

कण्ठ से क्यों नहीं कहते और चोदना नाम प्रेरणा का है वहां भी श्रुति वा स्मृति कहना चाहिये जहां प्रेरणा होती है।

जब इसमें विशुद्धानन्द स्वामी ने कुछ भी न कहा तब स्वामी जी ने कहा कि अच्छा आपने धर्म का स्वरूप तो न कहा परन्तु धर्म के कितने लक्षण हैं कहिये।

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि धर्म का एक ही लक्षण है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि वह कैसे हैं तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कुछ भी न कहा। तब स्वामी जी ने कहा कि धर्म के तो दश लक्षण हैं आप एक ही क्यों कहते हैं तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि वे कौन लक्षण हैं।

इस पर स्वामी जी ने मनुस्मृति का यह वचन कहा कि:-धैर्य 1 क्षमा 2 दम 3 चोरी का त्याग 4 शौच 5 इन्द्रियों का निग्रह 6 बुद्धि 7 विद्या का बढ़ाना 8 सत्य 9 और अक्रोध अर्थात् क्रोध का त्याग 10, ये दश धर्म के लक्षण हैं फिर आप कैसे एक ही लक्षण कहते हैं। तब बालशास्त्री ने कहा कि हां हमने सब धर्मशास्त्र देखा है इस पर स्वामी जी ने कहा कि आप अधर्म का लक्षण कहिये तब बालशास्त्री जी ने कुछ भी उत्तर न दिया। फिर बहुत से पंडितयों ने इकट्ठे हल्ला करके पूछा कि वेद में प्रतिमा शब्द है वा नहीं इस पर स्वामी जी ने कहा प्रतिमा शब्द तो है फिर उन लोगों ने कहा कहा है इस पर स्वामी जी ने कहा कि सामवेद के ब्राह्मण में है फिर उन लोगों ने कहा कि वह कौन सा वचन है इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह है देवता के स्थान कंपाय मान और प्रतिमा हंसती है इत्यादि फिर उन लोगों ने कहा प्रतिमा शब्द तो वेदों में भी है फिर आप कैसे खण्डन करते हैं इस पर स्वामी जी ने कहा कि प्रतिमा शब्द में पाषाणादि मूर्ति पूजनादि का प्रमाण नहीं हो सकता है इसलिए प्रतिमा शब्द का अर्थ करना चाहिये इसका क्या अर्थ है।

जब उन लोगों ने कहा कि जिस प्रकरण में यह मन्त्र है उस प्रकरण का क्या अर्थ है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह अर्थ है-अब अद्भुतशक्ति की व्याख्या करते हैं ऐसा प्रारम्भ करके फिर रक्षा करने के लिये इन्द्र इत्यादि सब मूलमन्त्र वहीं सामवेद के ब्राह्मण में लिखे हैं इनमें से प्रतिमन्त्र करके तीन हजार आहुति करनी चाहिये इस के अनन्तर व्याहृति करके पांच-पांच आहुति करनी चाहियें ऐसा लिख के सामगान भी करना लिखा है इस क्रम को करके अद्भुत शान्ति का विधान किया है जिस मन्त्र में प्रतिमा शब्द है सो मन्त्र मृत्युलोक विषयक नहीं किन्तु ब्रह्मलोक विषयक है सो ऐसा है कि जब विघ्नकर्त्ता देवता पूर्वदिशा से वर्त्तमान होवे इत्यादि मन्त्रों से अदभुत दर्शन की शान्ति कह कर फिर दक्षिणदिशा पश्चिम दिशा और उत्तर दिशा इसके अनन्तर भूमि की शान्ति कर के मृत्यु लोक का प्रकरण समाप्त कर अन्तरिक्ष की शान्ति कहके इसके अनन्तर स्वर्ग लोक फिर परमस्वर्ग अर्थात् ब्रह्मलोक की शान्ति कही है इस पर सब चुप रहे, फिर बालशास्त्री ने कहा कि जिस-जिस दिशा में जो जो देवता है उस उस की शान्ति करने से अद्भुत देखने वालों के विघ्न की शान्ति होती है, इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह तो सत्य है परन्तु इस प्रकार से विघ्न दिखाने वाले कौन है तब बालशास्त्री जी ने कहा कि इन्द्रियां दिखाने वाली हैं इस पर स्वामी जी ने कहा कि इन्द्रियां तो देखने वाली हैं दिखाने वाली नहीं परन्तु ''सं प्राची दिशमन्वावर्ततेऽथेत्यत्र'' इत्यादि मन्त्रों में से शब्द का वाच्यार्थ क्या है? तब बालशास्त्री जी ने कुछ न कहा फिर पंडित शिवसहाय जी ने कहा कि अन्तरिक्ष आदि गमनशान्ति करने से फल इस मन्त्र करके कहा जाता है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि आपने वह प्रकरण देखा है तो किसी मन्त्र का अर्थ कहिये शिवसहाय जी चुप ही रहे फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि वेद किससे उत्पन्न हुए हैं? इस पर स्वामी जी ने कहा कि वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं फिर विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि किस ईश्वर से? क्या न्यायशास्त्र प्रसिद्ध ईश्वर से वा योगशास्त्र प्रसिद्ध ईश्वर से अथवा वेदान्तशास्त्र प्रसिद्ध ईश्वर से इत्यादि? इस पर स्वामी जी ने कहा कि क्या ईश्वर बहुत से हैं। तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर तो एक ही है परन्तु वेद कौन से लक्षण वाले ईश्वर ने प्रकाशित किये हैं। फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर और वेदों में क्या सम्बन्ध है? क्या प्रतिपाद्यप्रति-पादकभाव वा जन्यजनकभाव अथवा समवायसम्बन्ध वा स्वस्वामीभाव अथवा तादात्म्य सम्बन्ध है? इत्यादि इस पर स्वामी जी ने कहा कि कार्यकारणभाव सम्बन्ध है। फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि जैसे मन में ब्रह्मबुद्धि और सूर्य में ब्रह्मबुद्धि करके प्रत्येक उपासना कही है वैसे ही शालिग्राम के पूजन का ग्रहण करना चाहिये।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि जैसे ''मनो ब्रह्मेत्युपासीत आदित्यं ब्रह्मेत्युपासीत'' इत्यादि वचन वेदों में आते हैं वैसे ''पाषाणादि ब्रह्मेत्युपासीत'' इत्यादि वचन वेदादि में नहीं देख पड़ता फिर क्योंकर इस का ग्रहण हो सकता है?

तब माधवाऽऽचार्य ने कहा कि ''उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयञ्चेति'' इस मन्त्र में पूर्त शब्द से किसका ग्रहण है?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि वापी, कूप, तड़ाग और आराम का ग्रहण है।

माधवाचार्य ने कहा कि इससे पाषाणादि मूर्त्ति पूजन का ग्रहण क्यों नहीं होता है?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि पूर्त्त शब्द पूर्त्ति का वाचक है इससे कदाचित् पाषाणादि मूर्त्तिपूजन का ग्रहण नहीं हो सकता, यदि शंका हो तो इस मन्त्र का निरुक्त और ब्राह्मण देखिये।

तब माधवाऽऽचार्य ने कहा कि पुराण शब्द वेदों में है वा नहीं?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि पुराण शब्द तो बहुत सी जगह वेदों में है परन्तु पुराण से ब्रह्मवैवर्त्तादिक ग्रन्थों का कदाचित् ग्रहण

नहीं हो सकता क्योंकि पुराण शब्द भूतकालवाची है और सर्वत्र द्रव्य का विशेष ही होता है।

फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि बृहदारण्यक उपनिषद् के इस मन्त्र में कि (एतस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराण श्लोका व्याख्यानान्यानुव्याख्यानानीति) यह सब जो पठित है इसका प्रमाण है वा नहीं?

इस पर स्वामी जी ने कहा-हां प्रमाण है।

फिर विशुद्धानन्द जी ने कहा कि यदि श्लोक का प्रमाण है तो सबका प्रमाण आया।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि सत्य श्लोकों ही का प्रमाण होता है औरों का नहीं।

तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि यहां पुराण शब्द किसका विशेषण है?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि पुस्तक लाइये तब इसका विचार हो।

माधवाचार्य ने वेदों के दो पत्रे निकाले और कहा कि वहां पुराण शब्द किस का विशेषण है।

स्वामी जी ने कहा कि कैसा वचन है पढ़िये।

तब माधवाचार्य ने यह पढ़ा-ब्राह्मणनीतिहासान् पुराणानीति।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यहां पुराण शब्द ब्राह्मण का विशेषण है अर्थात् पुराने नाम सनातन ब्राह्मण हैं।

तब बालशास्त्री जी आदि ने कहा कि ब्राह्मण कोई नवीन भी होते हैं?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि नवीन ब्राह्मण नहीं हैं परन्तु ऐसी शंका भी किस को न हो इसलिये यहां यह विशेषण कहा है।

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि यहां इतिहास शब्द के व्यवधान होने से कैसे विशेषण होगा?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि क्या ऐसा नियम है कि व्यवधान से विशेषण नहीं होता और अव्यवधान ही में होता है क्योंकि ''अजो नित्यः शाश्वतोयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे'' इस श्लोक में दूरस्थ देही का भी क्या विशेषण नहीं है? और कहीं व्याकरणादि में भी यह नियम नहीं किया है कि समीपस्थ ही विशेषण होते हैं दूरस्थ नहीं।

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि यहां इतिहास का तो पुराण शब्द विशेषण नहीं है इससे क्या इतिहास नवीन ग्रहण करना चाहिये।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि और जगह पर इतिहास का विशेषण पुराण शब्द है। सुनिये-''इतिहास'' पुराणं पंचमो वेदानां वेद।'' इत्यादि में कहा है।

तब वामनाचार्य आदिकों ने कहा कि वेदों में यह पाठ ही कहीं भी नहीं है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि यदि वेद में यह पाठ न होवे तो हमारा पराजय हो और जो हो तो तुम्हारा पराजय हो यह प्रतिज्ञा लिखो तब सब चुप हो रहे।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि व्याकरण जानने वाले इस पर कहें कि व्याकरण में कहीं कल्पसंज्ञा की है वा नहीं?

तब बालशास्त्री जी ने कहा कि संज्ञा तो नहीं की है परन्तु एक सूत्र में भाष्यकार ने उपहास किया है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि किस सूत्र के महाभाष्य में संज्ञा तो नहीं की और उपहास किया है यदि जानते हो तो इसके उदाहरणपूर्वक समाधान कहो।

तब बालशास्त्री और औरों ने कुछ भी न कहा, माधवाचार्य ने दो पत्रे वेदों के निकाल कर सब पंडितों के बीच में रख दिये और कहा कि यहां यज्ञ के समाप्त होने पर यजमान दशवें दिन पुराणों का पाठ सुने ऐसा लिखा है यहां पुराण शब्द किसका विशेषण है?

स्वामी जी ने कहा कि पढ़ों इस में किस प्रकार का पाठ है जब किसी ने पाठ नहीं किया तब विशुद्धानन्द जी ने पत्रे उठा के स्वामी जी की ओर करके कहा कि तुम ही पढ़ो।

स्वामी जी ने कहा कि आप ही इसका पाठ कीजिये तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि मैं ऐनक के बिना पाठ नहीं कर सकता ऐसा कह के वे पत्रे उठाकर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने दयानन्द स्वामी जी के हाथ में दिये।

इस पर स्वामी जी दोनों पत्रे लेकर विचार करने लगे इसमें अनुमान है कि 5 पल व्यतीत हुए होंगे कि ज्यों ही स्वामी जी यह उत्तर कहना चाहते थे कि ''पुरानी जो विद्या है उसे पुराणविद्या कहते हैं और जो पुराणविद्या वेद है वही पुराणविद्या वेद कहाता है'' इत्यादि से यहां ब्रह्मविद्या ही का ग्रहण है क्योंकि पूर्व प्रकरण में ऋग्वेवादि चारों वेद आदि का तो श्रवण कहा है परन्तु उपनिषदों का नहीं कहा इसलिये यहां उपनिषदों का ही ग्रहण है औरों का नहीं पुरानी विद्या वेदों ही को ब्रह्मविद्या कहा है। इस से ब्रह्मवैवर्तादि नवीन ग्रंथों का ग्रहण कभी नहीं कर सकते क्योंकि जो यहां ऐसा पाठ होता है कि ''ब्रह्मवैवर्तादि 18 (अठारह) ग्रंथ पुराण हैं, सो तो वेद में कहीं ऐसा पाठ नहीं है इसलिये कदाचित अठारहों का ग्रहण नहीं हो सकता।'' कि ज्यों ही यह उत्तर कहना चाहते थे कि विशुद्धानन्द स्वामी उठ खड़े हुये और कहा कि हम को विलम्ब होता है। हम जाते हैं तब सब के सव उठ खड़े हुये और कोलाहल करते हुये चले गये, इस अभिप्राय से कि लोगों पर विदित हो कि दयानन्द स्वामी का पराजय हुआ परन्तु जब दयानन्द स्वामी जी के 4 पूर्वोक्त प्रश्न हैं उन का वेद में तो प्रमाण ही न निकला फिर क्यों कर उन का पराजय हुआ।

॥ ओ३म् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इ वते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। य.40/3

जो ईश्वर के स्थान पर कारण रूप और कार्यरूप प्रकृति की पूजा करते हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	कुलवन्त राय शर्मा	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

उत्क्राम महते सौभगाय।

य. 11/21

हे मनुष्य ! महान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, राहों रोड, नवांशहर

WebSite: www.blmgirlscollege.com, email:blmcollege@yahoo.com
Phone No. 01823-220026, Fax: 01823-221474

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

प्रमुख विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
3. गरीब वर्ग की छात्राओं के लिये विशेष सुविधा।
4. एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी), पी.जी.डी.सी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., ड्रैस डिजाइनिंग डिप्लोमा (U.G/P.G), कॉस्मोटॉलोजी डिप्लोमा (U.G/P.G) आदि कोर्स की व्यवस्था।
5. खेलों की उचित व्यवस्था (गत वर्षों से हैंडबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान)

❖❖❖❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

देशबन्धु भल्ला	सुरेन्द्र मोहन तेजपाल	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	उप प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वायर्न्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे न नो वसून्याभर॥ १॥

हे सुखो के वर्षक, सबके स्वामी, प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों की उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो, और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवान ! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख–रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

दीपावली के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

❖❖❖

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

❖❖❖

अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

❖❖❖

विनोद भारद्वाज	सोहन सिंह	एस.के. बरूटा	संजीव डाबर
प्रधान	उपप्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥

(सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी) हे मनुष्यो, तुम परस्पर मिल कर चलो, मिल कर बातचीत करो, ज्ञानी बन कर तुम अपने मनो को भी एक बनाओ, जैसे कि तुम से पहिले विद्वान देव पुरुष सम्यक् ज्ञान वान् और एक मति वाले होकर अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।

2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।

3. अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।

4. आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	**ललित शर्मा**	**जिया लाल शर्मा**	**आरती कालिया**
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।

उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	ललित कुमार शर्मा	अचला भल्ला	अमित सभ्रवाल
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार विमन नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

◆◆◆

डा. सी.एम.भंडारी	**डा. मीनाक्षी शर्मा**	**गुरविन्द्र कौर**
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।

(ऋग्वेद. 1/4/6)

हम सदा परमेश्वर की शर्मणि–शरण में रहें।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	**सतीशा शर्मा**	**सविता उप्पल**
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

अरुण थापर	**श्रीमती राजेश शर्मा**	**राजेन्द्र कुमार**
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

सख्ये ते इन्द्र याजिनो मा भेम शवसस्पते।

त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम।।

भावार्थ: प्रभु के भक्तों में ऐसा विलक्षण बल आता है कि वे किसी से भी डरते नहीं क्योंकि जिनका रक्षक स्वयं प्रभु होवे, उनको डराने वाला कौन हो सकता है? वहीं प्रभु सदा अपराजित और हमेशा विजयी है इसलिये उसी को नमन करने योग्य है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य गर्ल्ज सी. सै.स्कूल, पुराना बाजार, दरेसी रोड लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में शहर की एक सौ दस वर्ष पुरानी संस्था

प्रमुख विशेषताएं

1. नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक गणित व विज्ञान विषयों के लिये **Smart Classes** की विशेष व्यवस्था।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़ाने का उचित प्रबन्ध।
3. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ
4. स्वच्छ जल हेतु फिल्टर, बिजली के लिये जनरेटर, अग्निशमन यंत्रों इत्यादि सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न
5. सत्र 2012-13 में बोर्ड परीक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम।
6. गत वर्ष की अपेक्षा छात्राओं की संख्या में वृद्धि।
7. कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
8. भव्य भवन खुले व हवादार कमरे, समृद्ध पुस्तकालय व सुसज्जित साईंस लैब।
9. छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिये शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था।
10. सांस्कृतिक व सह सहायक गतिविधियों का आयोजन
11. **Morning Assembly** में नैतिक मूल्यों व अच्छे संस्कारों को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा।
12. प्रबन्धकृर्त सभा के सभी सदस्य संस्था को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये निरन्तर प्रयासरत।

विशेष नोट: जरूरतमंद व योग्य छात्राओं के लिये निशुल्क पुस्तकें, वर्दियां, स्वैटर व जूते।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

विजय सरीन	**वजीर चंद**	**रणवीर शर्मा**	**ज्योति किरण शर्मा**
प्रधान	उपप्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।

शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः ॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) के पावन पर्व पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाबी पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विद्युत जेनरेटर तथा कैंटीन की उत्तम सुविधा।
6. खेलने के लिये खुला मैदान।
7. शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम।
8. उत्तम पुस्तकालय की सुविधा

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार
प्रधान

मुनीष मदान
प्रबन्धक

निर्मल कान्ता
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना **ऋ. 1/3/12**

ज्ञानमयी वेद वाणी अपने ज्ञान से ही बड़े भारी ज्ञान सागर का उत्तम रीति से ज्ञान कराती है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व

के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन +1, +2 के साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की स्तरीय शिक्षा का प्रबन्ध है। बी.ए.कक्षाओं में हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, इक्नामिक्स, राजनीतिक शास्त्र, इतिहास, पब्लिक, एडमिनिस्ट्रेशन, कम्प्यूटर एप्ली, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, ऑफिस मैनेजमेंट, फैशन डिजाइनिंग विषय पढ़ाये जा रहे हैं।

स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए.पंजाबी, एम.ए. इतिहास, एम.एस.सी.-आई.टी. एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्ली. एम.एस.सी. फैशन डिजाइनिंग एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन ड्रैस डिजाइनिंग, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कास्मेटॉलॉजी की कक्षाएं सफलतापूर्वक चल रही हैं।

इनके साथ बी.सी.ए., बी.बी.ए. तथा बी.कॉम के शिक्षण का भी प्रबन्ध है।

विशेषताएं

1. वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
2. बहुद्देश्यीय विशाल सभागार
3. सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
4. वाई फाई प्रांगण।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
6. उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
7. जैनरेटरों एवं वाटर कूलरों (आर.ओ.)
8. एन.सी.सी.फैशन डिजाइनिंग का सुचारू प्रबन्ध।
9. गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

डा.सूर्यकांत शोरी	**भारत भूषण मैनन एडवोकेट**	**केवल जिन्दल**	**डा.नीलम शर्मा**
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के

पावन पर्व पर

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत–प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह–क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध।

प्रेम कुमार बांसल एडवोकेट
प्रधान

भारत भूषह्यह्यह्यन एडवोकेट
वरिष्ठ उप प्रधान

संजीव शोरी
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

रामकुमार सोबती
प्रिंसीपल

॥ओ३म्॥

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

भावार्थः हे प्रभु हमें अंधकार से हटा कर प्रकाश की ओर ले चलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

❐ विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित विशाल भवन।
2. उच्च शिक्षित, अनुभवी तथा निष्ठावान अध्यापक।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां तथा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन
4. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा (2012) में प्रिया ने पंजाब में सोहलवां तथा जिला बरनाला में पहला स्थान प्राप्त करके नाम रोशन किया।
5. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
6. फिल्टर पानी का प्रबन्ध और साइलेंट जेनरेटर।
7. बच्चों के लिये प्राथमिक सहायता उपलब्ध।
8. बच्चों के लिये हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम उपलब्ध।

☆☆☆

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन — प्रधान

भारत मोदी — उप प्रधान

पवन सिंगला — उपप्रधान

बसन्त शोरी — मैनेजर

संजीव शोरी — सैक्रेटरी

वन्दना गोयल — कार्यकारी प्रिंसीपल

अनीता मित्तल — डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥1॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार प्रधान | **निहाल चंद एडवोकेट** प्रबन्धक | **सुषमा कुमारी** प्रिंसीपल

॥ओ३म॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव ''दीपावली'' के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद-अमृतसर

❒ प्रमुख विशेषताएं ❒

1. अमृतसर शहर की अग्रणी शिक्षण संस्था–चार दशकों से समाज की सेवा में
2. आर्य समाज की विचारधारा एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संदेशों के प्रचार व प्रसार को समर्पित संस्था।
3. विशाल, शानदार, हवादार तीन इमारतें एवं खेल के मैदान की व्यवस्था।।
4. जनरेटर, वाटर कूलर, साफ पानी के लिये आर.ओ. की उत्तम व्यवस्था।
5. नर्सरी से 10+2 (आर्ट्स एवं कामर्स) तक पढ़ाई का समुचित प्रबन्ध।
6. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त सुयोग्य अध्यापकगण।
7. कम्प्यूटर शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग एवं खेलों पर जोर।
8. औपचारिक शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
9. लड़कियों एवं गरीब वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष सुविधाएं।
10. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं एवं घरेलू परीक्षाओं में शानदार परिणाम

निरन्तर प्रगति की ओर

शशि कोमल प्रधान	**पवन टंडन** उपप्रधान	**पुरुषोत्तम चंद शर्मा** महामंत्री
डा. रविकांत शर्मा कोषाध्यक्ष	**संजय गोस्वामी** मंत्री	**पवन त्रिपाठी** प्रचार मंत्री

॥ ओ३म् ॥

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः

ऋग्वेद: 1/97/4

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो ! आप हम में उत्तम यश, धन और ज्ञान धारण करें।

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं

वैदिक कन्या पाठशाला औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. आधुनिक कम्प्यूटर लैब।
5. वाटर कूलर तथा ध्वनि रहित जनरेटर का उचित प्रबन्ध।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. साफ सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
8. आठवीं कक्षा तक के बच्चों को दोपहर के मुफ्त भोजन की सुविधा एवं मुफ्त पुस्तकें।
9. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
10. गरीब एवं योग्य छात्राओं को आर्थिक सहायता।
11. बोर्ड की कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम तथा सैशन 2011-12 में दसवीं की दो छात्राओं तथा+2 की दो छात्राओं ने स्टेट मैरिट में स्थान प्राप्त किया।
13. कल्चर संगीत कार्यक्रम के लिये योग्य तथा अनुभवी शिक्षा का प्रबन्ध।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**अशोक कुमार अग्रवाल**	**विजय अग्रवाल**	**नीरू शैली**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी ओर महाश्सय होते हैं, सत्पुरुष कहलाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै. स्कूल, बठिंडा

Ph.No. 0164-2238328

विशेषताएं:

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, R.O पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

अश्विनी कुमार मोंगा
प्रधान

श्रीमती ऊषा गोयल
उप प्रधान

गौरी शंकर
वरिष्ठ उप प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग
सचिव

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

सत्पुरुषः- सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के

पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

मुख्य विशेषताएं

1.उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग

2.खुले तथा हवादार कमरे।

3. वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल।

4. शानदार परीक्षा परिणाम

5. उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र कौशिक
प्रधान

अश्विनी मेहता
मैनेजर

चन्द्रमोहन
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां,जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य
प्रधान

विशाल पुरुथी
मैनेजर

श्रीमती सारिका
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरितादृवाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व
शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के
विकास के लिये निरन्तर कार्यरत,
नैतिक शिक्षा पर
विशेष बल।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और
आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये
सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू सलूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

इमा ब्रह्मा सधमादे जुषस्व

ऋग्वेद 20/11/3

इन वेद वचनों को, हे विद्वन ! हर्षस्थान व सभा सदन में सेवो अर्थात बोलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❒ ***आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर*** ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

शिक्षा जगत में महकता हुआ चमन

सोम प्रकाश	शैलेन्द्र मेहता	किरण जिन्दल
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा	कृष्ण गोपाल	रितु गक्खड़
प्रधान	उपप्रधान	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❒ ***आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर*** ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल
उपप्रधान

एस.के. शर्मा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥ (यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज आफ एजुकेशन

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।

2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।

3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।

5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।

6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।

7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा — प्रधान

कृष्णा गोपाल — उपप्रधान

एम.एल. जैदका — कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव ''दीपावली'' के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल सी.सै. स्कूल-मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

❒ विशेष आकर्षण ❒

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. +2 की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व सासाहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल	**नरेन्द्र सूद**	**समीक्षा शर्मा**
प्रधान	मैनेजर	प्राचार्य

॥ ओ३म् ॥

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर।

सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से शुभ कार्यों में खर्च करो।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य कालेज फार वूमैन खरड़

1. कम्प्यूटर शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
2. कढ़ाई सिलाई का विशेष प्रबन्ध।
3. फूल बनाना, खिलौने बनाने की विशेष शिक्षा।
4. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
5. अनुभवी तथा मेहनती स्टाफ।

❖❖❖

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये, उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

❖❖❖

अजय अग्रवाल प्रधान

अशोक शर्मा सैक्रेटरी

अमनदीप कौर प्रिंसीपल

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर श्रीमती ज्योति शर्मा प्रधाना आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बस्ती नौ जालन्धर के पधारने पर उनका स्वागत करते हुये श्रीमती सारिका जी प्रिंसीपल आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां एवं श्रीमती मोनू जी प्रिंसीपल आर्य गर्ल्ज सी.सै स्कूल बस्ती नौ जालन्धर।

समारोह में विराजमान श्री सुधीर शर्मा जी सभा कोषाध्यक्ष, श्री सरदारी लाल जी आर्य वरिष्ठ सभा उप प्रधान, श्री सुदर्शन शर्मा जी सभा प्रधान, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा सभा उप प्रधान, श्री विनोद भारद्वाज नवांशहर सभा मंत्री एवं श्री विपिन शर्मा जी सभा मंत्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में सम्बोधित करते हुये।

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल.-011/2019-20

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर विधायक श्री सुशील रिंकू को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, श्री रातुल शर्मा जी, सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य, स्कूल प्रबन्धक श्री विशाल परूथी जी एडवोकेट, श्रीमती सारिका जी प्रिंसीपल एवं श्री सुदेश कुमार सभा मंत्री।

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर श्री विशाल परूथी जी एडवोकेट स्कूल प्रबन्धक को सम्मानित करते हुये श्री सरदारी लाल जी आर्य स्कूल प्रधान एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्रीमती सारिका शर्मा प्रिंसीपल, श्री सुदेश कुमार सभा मंत्री। जबकि दूसरी तरफ खड़े हैं विधायक श्री सुशील रिंकू, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार एवं श्री रातुल शर्मा।

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर बच्चों को पुरस्कार दिए गये। पुरस्कृत बच्चों के साथ सभी पदाधिकारियों का एक संयुक्त चित्र।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा शर्मा प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक- प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org